

**TEXT CROSS
WITHIN THE
BOOK ONLY**

**TEXT FLY WITHIN
THE BOOK ONLY**

**TIGHT BINGING
BOOK**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178826

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. ^H83

Accession No. ^{GH}750

Author

T83Ka

Title

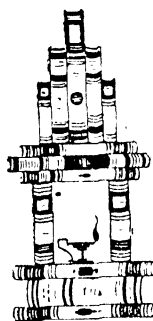
निपाठा सूत्रकांत
कावे का 2 नामे

This book should be returned on or before the date last marked below.

काले कारनामे

[उपन्यास]

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'



फल्याण समाहित्य मन्दिर
प्राण

विजयादशमी, २००७

प्रकाशक :

गोमेश्वर प्रसाद गुप्त

कल्याण साहित्य मंदिर, प्रयाग

मूल्य १ एक रुपया

मुद्रक :

महेश प्रसाद गुप्त

केसरवानी प्रेस, प्रयाग

निवेदन

युग-प्रवर्तक कवि तथा गद्यकार निराला जी का यह नवीन उपन्यास जमींदारों के काले करनामों का एक दर्पण पाठकों के सामने उपस्थित करता है। निराला जी की ओजपूर्ण शैली, अन्यतम भाव-व्यंजना, प्रभावकारी भाषा, यथार्थ चरित्र-चित्रण तथा उनके गद्य का निखरा हुआ जानदार रूप इस उपन्यास में आपको मिलेगा।

निराला जी की अस्वस्थता के कारण यह उपन्यास काफी दिनों से अधूरा पड़ा था। इस भय से कि कहीं निराला जी की यह नवीन कृति अन्धकार में ही विलुप्त न हो जाय, हम इसे इसी रूप में पाठकों के समक्ष रख देना अपना एक पुनीत कर्तव्य समझते हैं।

आशा है, हमारे पाठक हमारे अन्य प्रकाशनों की तरह इसे भी अपनायेंगे।

—प्रकाशक

पहिली नज़र

सावन का महीना आँख पर तरी बरसा रहा है। खेत लहालोट हैं, हरे-भरे, ज्वार, अरहर, उड़द, सन, मक्का और धान लहरा रहे हैं। आम, जामुन के दूरतक फैले हुए बागीचें फल दे चुके हैं, इस समय विश्राम की साँस ले रहे हैं। चिड़ियों के पर भीगे हुए हैं। फड़काकर पानी झाड़ लेती हैं और मधुर-मधुर चहकती हुई, इस पेड़ से उस पेड़ पर उड़ जाती हैं, नीचे टिड्डे जैसे कीड़ों पर नज़र रखती हुई, बुलबुल, गलार, पिङ्की, रुकमिन, सतभैये, कोयल, पपीहा, कबूतर और बरसात की बगले की ज्ञात वाली अनेक प्रकार की चिड़ियाँ, तालाब के किनारे के ऊँचे पीपल और इमली के पेड़ पर बसेरा लिए हुए। ताल पर सिंघाड़े की बेल फैलती हुई। लड़के अखाड़े कूदते हुये। औरतें काम काज से घर और बाहर आती जाती हुई। गाँव में चहल-पहल। हेंडोले पड़े हुए। लड़कियाँ भूलती हुई। कजली, सावन, बारहमासी गाती हुई। मर्द रात को रोज़ होते हुए आल्हे की कड़ियाँ गाते कन्धे पर लट्ठ रखे तम्बाकू-ठोंकते हुए आते जाते हुये। गलियारे में पानी मरा हुआ। मेड़ के ऊपर से लोगों की निकाली हुई पगडंडी, वह भी पानी बरस जाने से बिछलहर। कुएँ पर पनिहारिनों का जमघट।

जमींदार रामराखन के पक्के मकान से खेत, बाग़ और पेड़ प्रादि के दृश्य दिखते हैं। गाँव के उत्तरी निकास पर खासा-अच्छा

पक्का मकान । घर में लोगों की खासी-अच्छी संख्या । कहते हैं, इस मकान में ब्याह करते साधारण परिवार भी घबराता है । जो औरत रोटी करने के लिए चौके में जाती है, उसको दिनभर लग जाता है । जो पिसान पीसती हैं उनको रोज़ पाँच पसेरी से भी ज़्यादा पीसना पड़ता है । जिनकी पानी भरने की बारी आती है उनको एक-एक बक्क पचीसों घड़े पानी खींचना पड़ता है । जिनके हवाले गोबर उठाने और गाय-भैंस दुहने का काम रहता है, उनको भी दुहकर और कण्डा पाथकर आते-आते दुपहर हो जाती है । दो नौकर कुट्टी काटने और चारापानी करने से फुरसत नहीं पाते । लड़के चरवाहे बाग़ों में ढोर ले जाने वाले अलग हैं । घरभर गजी-गाढ़े से रहते हैं । मगर गाँव में इज्जत है । सबसे बड़े जमींदार हैं ।

मनोहर पड़ोस के एक गाँव का रहने वाला, विद्यार्थी है । भरा अच्छा बदन, गटा हुआ । इस जमींदार घराने से उसकी रिश्तेदारी है । जमींदार साहब को उसकी फूफी ब्याही हुई हैं । अपने गाँव राजपुर से वह जमींदार के गाँव सरायन रोज़ शाम के बक्क ज़ोर करने के लिये पहलवान रामसिंह के अखाड़े जाता है । वहीं अहीरों से तीन पसेरी का दूध तै कर लिया है; ज़ोर करने के बाद शकर मिलाकर सेर डेढ़ सेर पी लेता है और शाम की बियारी उसी रिश्तेदारी में करके सो जाता है । चार बजे उठकर गाँव चला आता है और कुछ पढ़कर स्नान-भोजन करके पाम के संस्कृत पाठशाले चला जाता है आचार्य कक्षा के दूसरे साल का विद्यार्थी है ।

मनोहर के पिता बम्बई में एक सेठ के यहाँ नौकर हैं । साधारण अच्छी आमदनी है । घर में खेती-बारी होती है, बैल हैं, गाय-भैंसें हैं, गाड़ी है, और स्नेहशीला महिलाएँ हैं । गाँव के लोग इनको भले मानुस कहते हैं ।

आज अखाड़े जाते हुए पहलवान रामसिंह के पड़ोसी पटियैत से

चार आँखें हुईं । शीलवान मनोहर को उन्होंने चंग पर चढ़ाया । कहा, ज़ोर कराने जा रहे हो ।

मनोहर ने कोई जवाब न दिया । बरसात का कीचड़ बचाकर ऊँची पगडंडी से निकलने को हुआ कि पड़ोसी ने खखारकर कहा, यह हमारा मकान है, गलियारा भी हमारा है, गाँव में जो सोहरत है वह कही, हाँ, बदन जैसा गठीला है और रेखउठान उम्र, हमको विश्वास है, इस ठाकुर को ज़ोर करा देते होंगे ।

मनोहर फिर भी सब पी गया । लजीले डग आगे रखने को हुआ कि पड़ोसी ने फिर आवाज़ कसी—अच्छे भले मानुस हो ! आदमी तो आदमी मकान उठाए लिये जा रहे हो ! अरे हम जमींदार के भी मान्य हैं, जवाब दे जाओ, नहीं तो हम उन्हींमें समझेंगे । मनोहर ने कहा, हम तो ज़ोर करने आते हैं, आपकी बात सच होती तो इन्हींको हमारे गाँव जाना होता । पड़ोसी ने कहा, हमको मालूम है, तुम्हारे गाँव में छाया अखाड़ा नहीं है, इसलिये यहाँतक पैज भरते हो !
 २००० नाम है लीलाराम ।

मनोहर सन्न हो गया । कुछ समझ न सका । पैर बढ़ाये गया । पड़ोसी कुछ दूर हो गया । आवाज़ दी, तो फिर तुमको अपने ही घर, समझ गए न, (एक बुरी मुद्रा दिखाते हुए) हकीकत समझ में आ जायगी, हम पीठ नहीं लगाते ।

मनोहर को आश्चर्य हुआ । मगर समझकर भी तरह दे गया । कुछ दिल धड़का, टेढ़ी खीर सीधी न हुई । चुपचाप अखाड़े पहुँचकर लंगोटा बाँधा और नाली में दड़ करने लगा । सौ डेढ़ सौ दड़े की कि उस्ताद जी नहाकर आ गये । लालटेन जलाकर अखाड़े के छप्पर में बंधी रस्सी के साथ बांध दी गई । चौदह पन्द्रह-साल वाले लड़के अखाड़ा गोड़ चुके थे, छप्पर की थूनिया पकड़े हुए बैठकर रहे थे । दो-तीन लड़के उसी गाँव के, उनसे कुछ बड़े, मगर मनोहर

से उन्नीस, ज़ोर करने के लिए आ गये ।

उस्ताद ने लँगोटा बांधा । पहले गाँव के बड़े लड़कों को लड़ाया । छोटे लड़के एक दूसरे से अखाड़े के किनारे-किनारे लड़ते रहे । अखीर में उस्ताद ने मनोहर को बुलाया । मनोहर तगड़ा है । लड़ता भी अच्छा है । बम्बई जाता है तो बड़े पहलवान से ज़ोर करता है । कई दाँव रवां हैं । उस्ताद सम्हलते रहते हैं । मगर ज़ोर वे मनोहर के जैसे दो तीन को करा सकते हैं । दस्ती, उतार, लोंकान, पट, ढाक, कलाजंग, धिस्से आदि-दाँव चले और कटे । ताक़त में भी रामसिंह बीस थे । मनोहर को ज़ोर कराकर हरे होने लगे ।

ठंडे होकर लोगों ने अखाड़ा बिदा किया । मनोहर दुकान से आध पाव शकर लेकर अहीर के घर गया । दुपट्टे में शकर रखकर दूसरे लोटे में दूध छान लिया और वहाँ बैठे-बैठे पी गया; फिर रोज़ की तरह अहीर से पानी मंगवाकर दोनों लोटे धोकर दे दिये और जमींदार की हवेली के सामने पीपल के तले वाले चबूतरे पर बैठकर पुरवैया के भोके लेता रहा । अबतक रात एक पहर हो आई थी ।

मनोहर को यहाँ कुश्ती के लिए आते अभी बहुत दिन नहीं हुए । माजरा यह है कि वह बम्बई में पिता के पास रह रहा था । संस्कृत वहीं पढ़ता था । मगर खाने-पीने का आराम रहने पर भी बम्बई का पानी उसको उतना अच्छा नहीं लगा । घर वाले साल छः महीने के लिए बम्बई रह आते थे, मगर दिल घर पर ही लगा रहता था । मनोहर का गाँव ऐसी जगह है जहाँ से कस्बे की संस्कृत पाठशाला नज़दीक है । घर में रहने का भी सुभीता है, इसलिये उसके पिता ने और घर वालों ने उसका घर रहना ही {अच्छा समझा । रामसिंह से उसकी मुलकात यों हुई कि निर्वाह के लिये रामसिंह कपड़े की दुकान करते थे; कस्बे के बाज़ार गाड़ी पर

लादकर कपड़े ले गये थे। गाँव के जमींदार के लड़के मनराखन ने कुश्ती के शौकीन मनोहर से दूर से रामसिंह को दिखाते हुये कहा, “अपने यहाँ के यह सबसे अच्छे पहलवान हैं, ज़ोर करना चाहो तो इन से बातचीत कर लो, फिर हम भी अच्छी तरह दाँव पेंच सिखाने के लिये कह देंगे हमारे रिश्तेदार होते हैं।”

मनोहर सीधे स्वभाव का रेख-उठान युवक, रामसिंह के पास मुस्काराता हुआ गया और ज़ोर करने की बातचीत छोड़ी। सुनकर रामसिंह देखते रहे और तोलकर कहा, अच्छी बात है आया करो। इसके बाद मन राखन एकान्त में मिला और अपनी जमींदारी का राज़ कहकर जैसे अपनी रक्षणशीलता रामसिंह को दी। रामसिंह मुस्कराकर राज़ लेते हुए कहा अच्छी बात है, मगर हमारे गाँव का हिसाब है।

मनराखन ने कहा, आप लोगों का हिसाब ठाकुरों के सिवा दूसरे जमींदार क्या लेंगे ! देख लिया जायगा। असामी मोटा है। जमींदार की निगाह न रही तो किसी रोज़ सर हो सकता है। यों, सर किये रहिये।

रामसिंह का राज़ गाँव में एक पड़ोसी जमींदार के यहाँ था, मगर गाँव भर के छोटे जमींदारों का राज़ मनोहर के रिश्तेदारों के यहाँ रहता था। सरकारी मालगुज़ारी इन्हींकी सबसे ज्यादा थी।

मनोहर के आने पर पहले पहल किसीने कोई छेड़छाड़ नहीं की, जैसे कुछ होता हुआ भी न हो रहा हो। दो एक रोज़ बाद बातों ही बातों रामसिंह ने अपने राज का इजहार किया। दूसरे जमींदार का माथा ठनका। उसने कहा, तुम हमराज़ हो, किसीको जो तुम्हारा रिश्तेदार नहीं, अगर लो तो हमसे पूँछकर, क्यों कि ऐसा ही सरकार और जमींदार का कायदा है। जिस गाँव के यह हैं वहाँ का जमींदार ज़िम्मेवर होगा। रात आठ नौ बजे के बाद जब यह आपके यहाँ से

चले जाते हैं तब कहाँ जाते हैं, क्या करते हैं, किसीको नहीं मालूम । अगर कोई चोरी-डाका हो जाय तो क्या तुम इसके जिम्मेवर होगे ?

रामसिंह ने कहा, यहाँ वह जो तुमसे भी बड़े ज़मींदार हैं, इनके रिश्तादार हैं । वही रात को रहते हैं । सबेरे गाँव जाते हैं । हमको इतना ही मालूम है । इनके गाँव के ज़मींदार हमारे रिश्तेदार हैं । राज़ हमारा ठाकुरों का । सर चढ़कर बातचीत की तो हज़ारों घोड़े मुतवावेंगे ।

इस तरह बातचीत बढ़ते बढ़ते बढ़ गई और गाँव भर में तरह तरह का रंग चढ़ने और उतरने लगा । मनोहर के रिश्तेदार ने गम्भीर होकर सुन लिया । लोगों की सलाह उनको पसन्द आई । रामसिंह चने होकर भाड़ कैसे फोड़ सकते हैं, उनके ज़मींदार की यह शिकायत उनको सही मालूम हुई । उन्होंने मतलब बैठा लिया कि किस रास्ते गुज़रा जाय, गाँव के मामले में रामसिंह की मदद दूँगे गाँव से कैसे पहुँच सकती है ।

मनोहर चबूतरे पर बैठा हवा ले रहा था । हबेली की चौपाल से चबूतरा देख पड़ता है । ज़मींदार मनोहर के फूफा साहब उठकर चले । मनोहर के पास आकर बैठे । पहले मन लेते रहे, बहलाते रहे । यह मालूम होने पर कि मनोहर सच्चा है और रामसिंह को उस्ताद की निगाह से देखता है, उन्होंने कहा, बच्चा, दिहात का हिमाय-किताब तुमको कम मालूम है । ज़मीं का जाल बिछा है । जो ज़मीं तुम्हारी नहीं उसपर पैर रखने का भी हक़ तुमको नहीं अगर उसका ज़मींदार किसी सूत से तुम्हारा रखवाला नहीं । सरकार को एक जवाब ज़मींदारी के अन्दर के किमी कारनामे के लिये देना पड़ता है । तुम जिस गाँव से आये हो, तुम्हारे साथ उस गाँव का

राज भी आता है। उस गाँव के ज़मींदार का राज इस गाँव का ज़मींदार रियाया की हैसियत से न लेगा। जो तुम्हारे पहलवान हैं वह तुम्हारे नौकर नहीं, तुम खुद उनके यहाँ लड़ने आते हो यानी उनके मातहत हो। ऐसा होने पर ज़मींदार के साथ का उनका रिश्ता जाता रहता है। बर्ताव में बल पड़ता है। ज़मींदार से वह एक रैयत की हैसियत से नहीं पेश आ सकते। रैयत के तौर पर वह तुमको पेश करते हैं। लेकिन ज़मींदार तुमको नहीं ले सकता, क्यों कि तुम्हारे साथ हमारा हिस्सा है, और हम ज़मींदार को तौहीन होने में हर तरह बचाएँगे। गुर्ज यह कि हमारे रिश्तेदार की हैसियत से तुम वहाँ जा सकते हो, मगर यहाँ के ज़मींदार के आदमी बनकर। कल अपने ज़मींदार से कहकर आना कि हम उनके आदमी हैं हमारा नाम लेकर, तब तुम्हारी समझ में बात आ जायगी। इस गाँव में हमारे आदमी को अपने आदमी करार नहीं दे सकते और ज़मींदार के आदमी को नहीं लड़ायेंगे तो क्या गुजरेगी यह उनके आगे आयेगा।

फिर हंसते हुए दूसरी बातचीत करने लगे। मनोहर ने सुना, उन्होंने मन ही मन कहा, ठाकुर बहक गये।

कुछ देर बाद ज़मींदार साहब उठकर चले गये। मनोहर विचार में पड़ गया। उसको नया विषय मिला, नया रास्ता जिससे वह कभी नहीं गुज़रा। उसको गाँव के ज़मींदार की बातें याद आईं, बाद को बाज़ार में मिलने का दृश्य एक बार फिर आँखों पर घूम गया, हकीकत बड़ी भयावनी लगने लगी। हाथ-पैर ढीले हो चले। उसने कभी नहीं साँचा, ज़मींदार की जात ब्रह्म-राक्षस से बढ़कर है जिससे पीछा कभी नहीं छूटता। क्षणभर में उसके मन की दशा बदल गई। पूरा-पूरा ज्ञान इस सम्बन्ध का पा लेने के लिए उकताने लगा। इतनी

भाप भर गई कि दूसरे ही दिन बम्बई खाना हो जाने की सोचने लगा ।

कुछ देर बाद एक आदमी बुलाने के लिये आया । मनोहर खाना खाने चला । घर के ग़ैर लोगों को बाहर निकालकर उसकी फूफी आज खुद थाली परोसकर बैठी ।

मनोहर हाथ-पैर धोकर, कुल्ले करके थाली पर बैठा । उसकी फूफी ने मुस्कराकर कहा, क्यों रे, तू पागल है ! तुझको यहाँ लड़ना था तो हमसे कहता ? रामसिंह आखिं क्या चढ़ाने लगा ! ले-देकर एक जोड़ी बैल, एक गाड़ी और एक दो-गाँठ कपड़ा ! जैसा कहा, कल वैसा कर । अभीतक हम लोग चुप थे । लड़का है, खिलवाड़ है । कल सही हाल मालूम हो जायगा । इसके बाद, जब यहाँ से जायगा, गाँव के डांड तक हमारा राज, उधर उनका ।

मनोहर को सारी रात बेचैनी रही । पड़ा तारे गिनता रहा । बहुत दूर तक अक्क चलती नहीं थी, फिर भी ज़मीन-आसमान के कुलाबे मिलाता रहा । जब ठंडी हवा लगती थी, सोचता था, दुनिया में लोग एक दूसरे से इस तरह क्यों नहीं मिलते कि छोटे-बड़े का भेद-भाव भूल जाय, एक दूसरे के गले-लगे दोस्त हों, गर्दन नापने वाले दुश्मन नहीं । माजरा जैसा रंग पकड़ रहा है, आखिर तक किसीकी जान से गुज़रकर रहेगा ।

लेटे कुछ देर हुई कि एक नौकर आया । उसने कहा, गाँव में किसी चिड़िया को यह हाल न मालूम हो । ज़मींदार से कह आना दूसरे गाँव का हमारा राज हमारे रिश्तादार के यहाँ है । यहाँ मालिक के छोटे भाई आपसे मिलेंगे । जैसा-जैसा कहें करते जाइएगा । यह कह-कर वह चला गया ।

मनोहर फिर करवटें बदलने लगा । पुरवाई के भोंके कभी कभी भाड़ियों की खुशबू से लदे मस्त करते हुये आने लगे । आस्था

की धुन सुन पड़ने लगी । साथ ढोलक बज रही थी । कुछ देर बाद मनोहर अपनी उधेड़-बुन में आगया । जैसे भूल-भूलैयों में पड़ गया हो, निकलने का रास्ता न पा रहा हो । जी उकताने लगा । आँखों पर रात पार हो गई । पौ फटने की सूरत नज़र आई । वह उठकर गाँव को चला ।



दूसरी नज़र

जब घर आया तब भी चक्कियाँ चल रही थीं। ढोर नहीं छूटे थे। पनहारिनें पानी को नहीं निकली थीं। गाँव के बाहर एकाध स्थार तब भी चक्कर काट रहे थे। घरों के दरवाजे नहीं खुले थे।

मनोहर रातभर का जगा था। किसीको आवाज़ नहीं दी। चौपाल की खाली चारपाई डालकर लेट गया। देखते-देखते आँख लग गई। आज पाठशाला जाने की उतावली न थी। घर की तरफ़ से न निश्चय था, न अनिश्चय। बम्बई जायगा या घर रहेगा, फैसला न कर सका था।

घर के लोगों ने उठकर उसको लेटा हुआ देखा तो जगाया नहीं। उसकी अम्मा को कुछ झुझक हुई, मगर वह भी जगनेतक मुँह दबाए रहीं। दिन का काम, पीसना, भैंस लगाना, कंडे पाथना, पानी भरना, रोट्टी करना आदि होता रहा। कभी-कभी मनोहर के सोते रहने पर फ़न्तियाँ चलती रहीं। जब जगा तब दुपहर थी। नींद के आ जाने से बदन हल्का हो गया। जङ्गल गया और दातों के लिये नीम का एक गोजाद लेकर लौटा। फिर डोल, लोटा, डोर, और धोती लेकर पक्के कुएँ को चला। नहा-धोकर घर लौटा,

माकान के भीतर देवता को प्रणाम करने गया, कुछ देर बैठा माला जपता रहा, फिर चन्दन लगाए हुए लौटा और चौके को गया। उसकी माता ने थाली परोस दी और बैठी मक्खियां उड़ाती रही। जब आधा भोजन कर चुका, एक गिलास पानी पी लिया, तब उसकी माता ने पूछा, “क्यों भैया, आज आते ही सो गए? पाठशाला नहीं गये।”

मनोहर ने जवाब दिया, “कुछ ऐसा ही पेच पड़ गया है। तुमसे कहूँगा। बड़ी बात नहीं, एक बतंगड़ है।

माँ मुँह देखती रहीं। आग्रह आँख से फूटकर निकल रहा था।

मनोहर ने भोजन समाप्त किया। हाथ-मुँह धोए, कुल्ले किए। माँ ताक पर थीं, इसलिये घर की खिड़की से गोंड़े तरफ़ गया, इशारे से माँ को बुलाकर।

उधर चारों तरफ़ से चारदीवार बीच में तीन-चार नीम के पेड़ हैं, छाया किए हुए। दो-एक चारपाइयां पड़ी हैं। औरतों के विश्राम की जगह है। बाहर से कोई देख नहीं सकता। जैसे छोटा नीम का एक बागीचा हो। एक तरफ़ एक कुँआ है। पानी खारा होने के कारण चौका-टहल और नहाने-धोने के ही काम में लाया जाता है। खुली जगह होने के कारण पुरवाई के विराम पूर्ण भोंके आ रहे हैं। नीमों पर चिड़ियों की चहक दिनभर सुन पड़ती है।

मनोहर पड़ी हुई चारपाई पर बैठ गया। माँ भी एक किनारे आकर बैठीं। सशक्त दृष्टि से माँ को देखता हुआ कुल हाल मनोहर धीरे-धीरे बयान कर गया। माँ ने कहा, बाहर की बात है, घर के पुरखे यहाँ हैं नहीं, इसलिये ननदोई जी का कहना ही करना चाहिये।

मनोहर ने कहा, अम्मा, बात यह बड़ी पेचीदी जान पड़ती है। हम किसी अधिकार के आदमी हों, हमारे रक्षण के कोई नियम हों,

उनका पालन होना जरूरी है, इस बात से इसका विरोध जाहिर होता है। ऐसी ही बात बम्बई में गुजरी जिसके कारण हम लोगों को यहाँ चला आना पड़ा। किराए के जिस मकान में रहिए, किराया देते रहने पर भी जैसे अपना कोई स्वत्व हो। पिता जी जहाँ नौकर हैं, वहाँ माह-माह काम करने और तनख्वाह लेने के अलावा उनकी व्यक्तिगत कोई जिम्मेवारी नहीं। स्वत्वाधिकारी सेठ भी है जिनके वे नौकर हैं। किराये के मकान में स्वत्वाधिकार जमींदार का है जिस का वह मकान है। हमारा समाज इस तरह स्वत्वहीन गुलामों का एक समाज हो रहा है, और यह बाह्यत्व। इस पर भी तरह-तरह से नीचा देखने की नौबत आती है। अब इतर जन सर उठाने लगे हैं। हमारी अवमानना समाज की उन्नति का पहला साधन हो रही है। दूसरे हमारा ब्राह्मणत्व हमारी एक छोटी सी पहिचान के सिवा, एक छोटे से दायरे में आजाने के सिवा कोई ताकत नहीं रखता—दूसरे प्रान्तों में हम शूद्रों से भी बदतर समझे जाते हैं। आपको मालूम हो कि मकान-मालिक के इतर विचार के कारण हमने सर उठाया था जिससे नीचा देखना पड़ा। समाज में उसकी बाह्यता के लिए हुई मान्यता उसके पुरोहित के हक में गई थी। हम जैसे बाह्य हीन रहे हों। जाति की आँखों में जातिगत अभिमान नहीं रहा। इस तरह आदमी लगाकर दूसरे का स्वत्व खींचना आदमी का अपमान है जिससे हमको सर उठाना पड़ा। तुमको भी कितना नीचा दिखाया जब उसने अपनी जुबान से अपनी ब्राह्मणी लगाकर कहा, हमारे घर में पूजा-दान के समय इन्हींका मान है, तुम्हारा नहीं; तुम कौन हो कौन नहीं, हमको क्या ज्ञान ? उस मकान में रहकर बेइज्जती सर किये रहने से बाज आये। मकान छोड़कर चले आये। यहाँ वही माजरा है। अब अगर फिर किसी कारण से हमको गाँव छोड़कर बम्बई जाना पड़ा तो हम कौनसा मुँह लेकर जायेंगे।

माता ने सुन लिया । देखते-देखते उनके हृदय की सिंहनी-जैसे ऊपर को छलांग मारी, उनका सर तमाम आदमियों के ऊपर उठ गया । बड़े ही स्नेह तथा गम्भीरता के स्वर से उन्होंने कहा, बेटा मुझको विश्वास है कि तू मेरे दूध की लाज रखेगा और इन कामों की तहतक पहुँचकर इनकी जंजीर तोड़ने के काम आएगा । अभी तो कच्चा बच्चा है । इन तमाम लांछनों को चुपचाप सर उठाए हुए तैयार होता रह कि एक वक्त तू इन की जड़े काटे । दूसरा कोई चारा नहीं । हम एक मुद्दत से यह कसाले भेल रहे हैं । माँ से बेटे को वरासत में जो बातें मिलती हैं, वे हमारे क्रौम की गर्दन भुका देने वाली हैं । मुसलमानी ज़माने से जो अपमान होते आये हैं, बेटे, तू अभी बच्चा है, तुझसे कहने-लायक नहीं, सिर्फ तैयार होता जा कि माँ के सपूत का जवाब दे—वे बातें दुधारी तलवार हैं, मत समझ की तेरी माँ, तेरी बहन एक धर्म के रिश्ता के सिवा और कुछ रखती है । मजबूरी के सिवा मरदों के हाथों उनके और भी जो अपमान होते हैं वे सैकड़ों बिच्छुओं के डंक मारने से ज़्यादा जलन वाले और जहरीले हैं । मरदों की आँख के नीचे उनके अपमान हुए हैं और मरदों के हाथ-पैर नहीं चले । हम पीढ़ियाँ लिख रखते हैं । हमारी माँ का कहना था सौ पीढ़ियाँ बीत चुकी हैं; यह तैतालीसवीं पीढ़ी के बाद । हम उसको भगवान को अर्पण कर देते हैं और बाकी पीढ़ियाँ चलती हुई बांधे रहती हैं । यही कामना दिन-रात रहती है कि नारियों का अपमान है, हे भगवान, बदला चुकाओ । सिर्फ बदले की आग धधकती है ।

मनोहर चुपचाप सुनता रहा । कहा, माँ मैं तुम्हारा योग्य-पुत्र होने की कोशिश करूँगा ।

कहकर वह उठ खड़ा हुआ और बाहर चला गया ।



तीसरी नज़र

गाँव में चारों तरफ हरियाली ही हरियाली है। अरहर और ज्वार के पेड़ इतने बड़े हो गये हैं कि उनसे तमाम खेत हरे-भरे नज़र आते हैं। धान भी दूसरों की हरियाली से होड़ कर रहे हैं। सनकी तो बात ही नहीं। पौधे मुट्ठीभर रोज बढ़ते हैं। सब से ज़्यादा ऊँचे वही दिख रहे हैं। बाग़ों में घास भी घुटना छूने लगी है। गाँव के लड़कों की डोर फूट के खेतों में लगी है जिनकी ककड़ियाँ उतरकर आने लगी हैं। क्षणभर में चारा-पानी हो जाता है। सींचने की कहीं चिन्ता नहीं। मकान छापे-छोपे जा चुके हैं। किसान आराम की साँस ले रहे हैं। बड़े २ आदमियों की चौपालों में दो-दो चार-चार छुः-छुः आदमी बैठते हैं। बाज़रे की खेती कौन-कौन करेंगे इसकी बात-चीत हो रही है। ज़मींदार का मकान चापलूसी का अड्डा है। मनराखन खासे अच्छे पलंग पर कालीन बिछाए बैठा हुआ है, सटक पी रहा है। कुछ फासले पर साधारण-सी नंगी चारपाई पर सिपाही बैठा है, सरहाने के सहारे लट्ट रखे हुए। कुछ किसान जो साधारण जातिओं के हैं, चौपाल के चबूतरे पर छप्पर के नीचे उकड़ूँ बैठे हुए हैं। आशा है, मालिक पी चुकें तो वे लोग भी चिलम पिएँ। चापलूसी में एक दूसरे से

तेज़ पड़ रहे हैं। बड़े मालिक बैठके में आराम कर रहे हैं। मनोहर दरवाजे की नीम की छांह से गुजरता हुआ चौपाल पहुँचा। जिस चारपाई पर सिपाही बैठा था उसपर बैठने को हुआ। जमींदार का सिपाही सरहाने की तरफ़ सरक गया। बैठने के साथ मनोहर का कलेजा भी जैसे बैठ गया। मनराखन ने उसको सिर्फ़ ऊँचे से जैसे एक दफ़्ते देख लिया और धीरे से सटक गुड़गुड़ा दी। सिपाही को हिम्मत हुई वह सरहाने की तरफ़ सरक गया, मुस्कराया और मनोहर को देखकर कहा, आओ बैठो। रोज-रोज का अभिवादन गाँव के जमींदारी प्रकरण में नहीं भी रहता।

मनोहर ने देखा, हिम्मत बंधकर भी डीली पड़ जाती है। ऐसा बंधान है जो उखाड़ा नहीं उखड़ता। आज इतनी ही देर के आवेश में उसकी निगाह में वह ताक़त आ गई है जो हर एक की सूरत का जिन देख लेती है ओर समझ जाती है कि यह आदमी जान-बूझकर कमजोरी का शिकार बना हुआ है। यह उस समय की बात है जब देश में राजनीतिक संस्थाएँ प्रबल नहीं थी। सरकार के यहां रियाया की तरफ़ से जवाब देने वाले जमींदार ही थे।

सिपाही ने मुस्कराकर पूछा, आज दुपहर-दुपहर कैसे आए। ऐसे वक्त गाँव में कभी तुम्हारी चिड़िया भी नहीं दिखी।

मनोहर ने कहा, पाठशाला नहीं गए। मनराखन से कुछ काम है। सिपाही ने लोक लिया। काम की बात करते हो तो हमसे पूछो। हम इनके पिता से कहेंगे। खेल-कूद वाली बात हो तो इनसे करो। पहलवानी यह करते नहीं, ज़रूरत पड़ेगी तो हाँ, दो-चार पहलवान ला देंगे। यह इनका पानी चढ़ा रहने के सिवा उतर न जायगा।

कहकर सिपाही ने हाथ में अपनी लाठी उठाकर उसकी बंधी राखी खोलने लगा कि फिर सुधारकर बांध दे।

लागन बोल मनोहर को चुभा । उसने कहा विजय सिंह, हम तुम्हारे पास नहीं आए और चारपाई में पायते ही बैठे हैं और अभी तक वह जमाना नहीं आया कि हम लोगों से तुम हाथ बांधे हुए न पेश आओ ।

विजयसिंह भी नौजवान है । तन्दुरुस्ती वैसी अच्छी नहीं । ज़मींदार का सिपाही, लत लुच्चई की पड़ी हुई । जवानी में जैसे चूसा आम हो । मनोहर की तन्दुरुस्ती से ख़ार खाता था । आज मौक़े पर पाकर बुख़ार उतारा । मनराखन अमीरज़ादे की तरह सटक पीता हुआ कृपा की दृष्टि से रह-रह कर मनोहर को देख लेता था ।

पहले जो हिम्मत पस्त हुई थी वह बगागत में बदल गई । मगर सभाल कर उसने सिपाही से लाठी ले ली । ढीली पकड़ी लाठी विजय के हाथ से निकल गई । उसको अपने क्रोध के कारण डर हुआ । साथ ही चीख निकली—अरे अपमान कर डाला !

इन्द्रमन लोध उन बैठे आदमियों में था । बिना कहे उससे नहीं रहा गया ।—उसने कहा, मालिक तुम तो हवा से बिगड़ते हो ! इन्द्रमन को जलन थी । सिपाही ने उसकी बहन की अस्मत् बिगाड़ी थी । रोटी पड़ने के डर से उसने किसीसे कहा नहीं । ज़हर के घूंट पीकर रह गया । आज एक मौका हाथ आया ।

विजयसिंह इसको ताड़ें बिना न रहा । मगर तरह देकर बात बनाई । कहा सावन का आधा हो रहा है ? हरियाली भूमती है ! लाठी ज़मींदार की, यह देख, हाथ खाली हैं । कहकर अपने हाथ दिखाए और हुक़म दिया, झपटकर छीन लाठी ।

इन्द्रमन की कुल नसे ढीली पड़ गई । दूसरी सवारी गठी देखी । मनोहर से कहा, रखिए, महाराज, लाठी उधर, जिनकी है । इनके लिए,

जब यह अपने आये हैं, एक लौंडा काफ़ी है; तुम्हारी इनकी हाथी और मेढ़े की जोड़ है ।

मनोहर लाठी लिये ही रहा । मनराखन इन्द्रमन की बात पर जगे । आँखें तरेरकर कहा, तुम्हारे लिये ठाकुर ही हैं, कायदे के खिलाफ़ कैसे बोलते हो ?

इन्द्रमन ने कहा, और जो यह पाँयते बैठे हुये हैं, यह कौन हैं ? इनको तो विजयसिंह ने बेबात-की-बात में ले-दे डाला । मनराखन उठकर खड़े हो गये । कहा, सूद बिना जूतों के सीधा न हांगा । कहकर ताव में आकर लतखोरे तक लपककर जा जूता उठाया वह इन्द्रमन ही का था ।

इन्द्रमन ने कहा, मालिक, ए, राम के हाथ ऐसा फ़ैसला है । यह जूता हमारा है ।

मनोहर उठकर खड़ा हो गया । मनराखन से कहा, चलाओगे तो पटले हमीको लगेगा, इसको डाल दो ।

मनराखन ने जूता डाल दिया ।

मनोहर ने कहा, यह लो अपनी लाठी । मनराखन ने लाठी ले ली । मनोहर कहता गया, गाँव के ज़मींदार का राज आप लोगों के यहाँ रहा । बाहर का हमारे रिश्तेदारों के यहाँ । उस रोज़ की बाज़ार वाली बात न भूलो । तुम्हारी अगर वहाँ तक बिसात हो तो अपनी कर गुज़रना । हमारा वहाँका हिसाब यहाँके ज़मींदार के साथ नहीं रहा ।

उस वीर के सामने मनराखन की हिम्मत पस्त हो गई । जैसे किसी ने नज़र बाँध दी । मनोहर उतरकर सीधे घर चला ।

बड़ा बुरा रवैया है भैया, ठहर जाओ, हम लोग भी चलते हैं, कहते हुये किसान भी अपने-अपने जूते पहनकर चौपाल छोड़कर चल दिये । क्षण भर में जैसे समा बदल गया । मनराखन और विजयसिंह के मुँह पर मक्खियों ने कई चक्कर मारे ।



चौथी नज़र

मनोहर की नसों में तनाव आ गया था, परन्तु भगवान के भीतर वाले कमरे में बैठे अपने को शान्त कर लिया, और समय से पहले तीसरे पहर के डलते-डलते अपने लँगोटा-जाँघिया लेकर अपनी फूफ़ी के घर के लिये खाना हो गया। कुछ गर्मी आँख में थी; वह उसके चरित्र और स्वास्थ्य के कारण भी वह सर दबाये हुये भरसक निगाह नीचे से निकाल रहा था। चलते हुये भीटों को बाँये छोड़ा। नाला मिला जिसका पानी वह चुका था। उसमें निकलकर लोमड़ी दूसरी झाड़ी की ओर भगी जाती दिखी। देखा, गर्मी के हरे-भरे जवालों के पौधे पानी के पड़ने पर झुलस चुके थे। उनके बीच से हरी घास ने मर उठाया था। कुछ आगे बढ़ा तो कमरतक बढ़ी भंजूर से एक चौगड़ा लोमड़ी के घुसते ही निकलकर भागा और कूदता हुआ बगल की दूसरी झाड़ी में जा छिपा। मनोहर क्रोध बढ़ाता गया। कुछ आगे उसके फूफ़ा का एक बाग़ मिला। उस गाँव में उनके दो-ढाई-सौ बीघे बागात है। यह बाग़ भरा है। फिर भी रीण और बबूल के पेड़ अधिक हैं। गाँव की जमींदारी से हर-तीसरे साल दज़ार्गे के खुदरो पेड़ उसके फूफ़ा जमींदार साहब बेचते हैं, जिनमें सौ

पचास रुपये के किसानों के भी पेड़ पड़ जाते हैं। गाँव के किनारे का पक्का ताल और संकटेश्वर महादेव का शिवाला मिला। यह भी उसके फूफा लोगों की कृतियाँ हैं।

आगे गाँव आया। गलियारे से होते हुए मनोहर अपने फूफा की हबेली की तरफ चला। पहले ही रामसिंह के मुहल्ले वाली राह छोड़ दी थी। घर पहुँचकर फूफी, फूफा, फूफा के भाई और उनकी स्त्री आदि गुरुजनों के पैर छुए। फिर दरवाजे की बड़ी चौपाल में आकर चारपाई डालकर बैठा। उसके फूफा के छोटे भाई रामशंकर हैं। गाँव का कुल हाल इसने उनसे कहा। राज चला देने के इरादे वह उसको लेकर एक काछी के यहाँ गये जो उनका किसान है। रामशंकर जी ने मनोहर से कहा, यहाँ जितने हमारे किसान हैं, सब हमीं-हम हैं। तुम यही समझो, यही तुम्हारे रिश्तादार और ज़मींदार हैं।

मनोहर पीता गया।

रामशंकर ने आवाज़ दी। काछिन बैलों को सानी दे रही थी, हाथ में खली और भूसा लपेटे बाहर निकल आई।

रामशंकर जी ने उसके गुप्त अंग की ओर उँगली उठाकर कहा, यह तुम्हारी फूफी हैं और ज़मींदारिन, इनके सरपरस्त हैं सरकार, कहो हाँ।

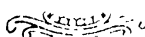
मनोहर ने कहा, हाँ। मगर सिमितकर रह गया।

रामशंकर जी ने दूसरा दृश्य जो उनका असली है दिखाया। कहा, काछिन भउजी, वही आज फिर दे जाओ। यह तुम्हारे भतीजे हैं, इनका कुछ आदर-स्वागत करना है।

काछिन ने कहा, ऐ, अभी तो बतियाँ हैं। जब बड़ेगी तब देंगे। करेले की बेल तो उजाड़ दी गई। पहले की लगाई थी। कुछ मिर्चें होंगे और कुछ ककड़ी की बतियाँ। कोहड़ा भी अब नहीं रहा, और हम साल हमने कुछ लगाया नहीं।

रामशंकर ने कहा, मसालेदार ककड़ी की जैसी तरकारी दूसरी नहीं होती, वही दे जाना ।

मनोहर ने देखा, यह इनका असली रूप है । कुछ कहा नहीं, पीछे लगा उनके साथ चला गया । रास्ते में उन्होंने कहा, यह राज है । अब तुम हमारे आदमी हो । रामसिंह के यहाँ खबर भेज दी जायगी । वह हाथ जोड़कर पहले पालागन करेंगे, तुम आशीर्वाद दोगे, फिर वह तुमको लड़ायेंगे । अपना उस्तादघाला राज तुमपर रखेंगे । जब लौटकर आओगे तब रामसिंह का राज हमारे राज में रहेगा । यह बर्ताव है । इसके बिना चलन नहीं चलता । जमींदार राजा है । उसका हिसाब पहले । सरकार के यहाँ उसका कहना । वह नेकमाश को बदमाश करार दे सकता है । सरकार उसकी बात मानेगी । बदमाश की निगरानी वह अपने ज़िम्मे ले सकता है । सरकार को उसपर विश्वास है । सरकार से समझौता उसीका होता है, इसलिये मुख्यतः तुम्हारे सर दो हैं, सरकार और जमींदार । इसको कभी न भूलो । यह लकड़ी हाथ से गई कि दुनिया में कहीं भी थाह न मिलेगी । अब आओ, अपना काम देखो ।



पाँचवीं नज़र

रामसिंह बैठे थे। पक्के गोल्ले से कस्बे को गाड़ी ले जाते हुये बरसात में और सहूलियत थी। देहात के लोग घोड़ों पर सामान लाद कर आते थे, गाड़ियाँ बन्द रहती थीं। लिहाज़ा भाल बाज़ार में कम पहुँचता था। रामसिंह गाड़ी ले जाते थे, माल अधिक बिकता था। आजकल लालोलाल हैं। खोए की बर्फियाँ बनवा ली हैं, जलपान होता है और ठंडाई में पच्चीस बादाम और पड़ने लगे हैं। घी आधा पाव और खाने लगे हैं। सबसे बड़ी सहूलियत यह हुई है कि मनोहर-जैसा शार्गिंद क्या चढ़े फिरने का घोड़ा मिला है। गाँव में कई जगह गरदन उठाकर गाल बजा चुके हैं। इसीका पानी चढ़ा है। लोग किस-किस मनोवृत्ति के होते हैं, इसका फ़ैसला बड़े-बड़े दार्शनिक नहीं कर पाये। एक पहलू से उसकी अच्छाई साबित होती है तो दूसरे से बुराई। जिस हद तक रामसिंह को भला आदमी कह सकते हैं, उसीतक बुरा भी। गज़ कथा है। रूढ़ निकालना पाठक या दर्शक का काम है। आख़ीर तक एक हासिल होगा ही। अगर किसी गुमराह को समझ की कमी के कारण कुछ का कुछ सूझ जाय तो वह एक उपन्यास का ही प्रकरण होगा जैसा कि होता जा रहा है।

ठंढाई के चढ़ते हरे नशे में रामसिंह आँखें खोल-मूँद रहे थे कि ज़मींदार का सिपाही लट्टु का बँधा गुला ज़मीन पर दे-मारकर रामसिंह के साधारण ज़मींदार को साथ लिये बोला, देखिये ठाकुर साहब, राज़ ज़मींदार का, भतीजा ज़मींदार का, आपकी मातहत (रामसिंह के ज़मींदार को इशारे से बताते हुये) आ रहा है, लड़ाइयेगा, भला-बुरा जो कहना हो, आपकी मार्फ़त कहिएगा। लड़का है, जैसा उनका, वैसा ही आपका। चोट न लगे, खयाल रखिये। सलाम।

सिपाही चला गया। रामसिंह ने फिर एक बार आँख खोली और मूँदी। उनके ज़मींदार ने ललकारकर पूँछा, ज्यादा चढ़ गई क्या ?

रामसिंह ने लापरवाही से फिर आँख खोली और मूँदी, और तख़्त की एक बग़ल थपकी मारकर बताते हुए कहा, आओ, बैठ जाओ।

ज़मींदार यमुना प्रसाद बैठ गये। बड़े ज़मींदार की झेप उतारने के लिये कहा, ये शान हैं।

रामसिंह ने भी झेप उतारी, कहा, कहो तो हम भी जवाब भेज दें।

छोटे ज़मींदार के बाज़ो हाथ आई। कहा, बस हमारे दरवाजे चले चलो, बात हम यहाँ न लेंगे, नहीं, कहो, यह ज़मींदार की चौपाल है।

रामसिंह की फिर धिध्धी बँधी। दबकर मंज़ूर कर लिया। सोचा, यहाँसे बर्हातक चलकर व्यर्थ मिहनत करनी है। हम न मानेंगे तो यह जी न छोड़ेगा।

जमकर ज़मींदार ने कहा, कहो, सिपाही तो हमारे हैं नहीं, दो सौ बीघे के पट्टीदार हैं। मगर गुल खिलेगा। कुछ हमारी भी नज़र ?

रामसिंह कुछ और बैठे, यह जमींदार महाशय भी ब्राह्मण थे । रूढ़ि ऐसी कि घूम फिर-कर उसीपर आना था । सोचा, वह भी कौन, काम आये, न आये; दूर का रिश्ता, फिर भी ठाकुर हैं, पानी गहरे का आया तो देख लिया जायगा, ज़िले का भी राजसी टाट हमारा ही हैं । बोले, क्या हम इनके घर इनको बुलाने गए ?

जमींदार ने कहा, यह तो हम पूछेंगे, यह तौर जमींदाराना है, अपने ढंग से चलो, जैसे रपोर्ट कर रहे हो । यही तो बिगाड़ की बुनियाद है ।

रामसिंह ने काँखकर कहा, अब और तो हमसे नहीं उतारा जाता ।

जमींदार ने कहा, तुम अपनी तरफ़ से कैसे दूसरे आदमी को बिना जमींदार की सलाह रात के वक्त लड़ने के लिये बुला लाओगे ?

रामसिंह ने कहा, जब इतनी-सी बात तुम्हारी समझ में नहीं आती तब हम और क्या समझावें ? अगर इससे काम चल जाय तो अच्छी बात, नहीं तो जैसे गाँव के दूसरे जमींदार का राज़ लिया है, वैसे ही यह लो (हाथ उठाकर खाली मुट्ठी खोलते हुये) यह भी वैसा ही राज़ है ।

जमींदार ने कहा, तुम किसी जमींदार का राज़ यों नहीं दे सकते । यह राज़ जितैला हैं । अगर ऐसा ही करना है तो उस जमींदार को बुला लाओ । तुमसे अदा करते नहीं बनता ।

रामसिंह तैश में आ गये । कहा, अच्छा तो जाओ ।

जमींदार भी गर्म पड़ा । पूछा, जगह किसकी है ?

रामसिंह को जवाब देते पहाड़ जान पड़ा । खुद उठकर चलने को हुए ।

जमींदार ने कहा, हमारी बैठक ही से जा रहे हो न ?

रामसिंह को ताव आ गया। ज़मींदार को पकड़कर उठा लिया, और पास ही के उनके मकान के पास लाकर चौपाल के पास पड़ी चारपाई पर ढाल दिया और कहा, अब तो हो न अपने चारपाई पर !

ज़मींदार को बहुत ही बुरा लगा कि पूछता ही जा रहा है, चड़्डी ही गाँठे हुए है। रुख़ फेरकर कहा, इसका जवाब ही मिलेगा।

रामसिंह नशे में थे ही, ठपाक से आल्हा की लड़ियाँ गाने लगे —

जिनकी माता ना हरजाई, उनकी बार-बार बलि जाय।

जिनकी माता कायर जन्में, उनकी रोते रात सिराय।

जनम हुआ है छत्री घर तो ज़वानी जूझे खेत अधाय।

जनम हुआ है कायर घर तो घर बैठे अमरौती खाय।

मनोहर समय पर ज़ोर करने के लिये गया। उसको मालूम हुआ, अखाड़ा नहीं लगेगा। वह लौट आया। मन्दिर के चबूतरे पर कसरत करके दूध पीकर आराम करने लगा। दस-ग्यारह बजे बियारी के वक्त तक ज़मींदार से बातचीत होती रही। उसकी ज़वानी यह मालूम करके कि अखाड़ा नहीं लगा, ज़मींदार चौंके। उनको यह हाल मिल चुका था कि बाज़ार में मनराखन की मार्फ़त मनोहर की रामसिंह से भेंट हुई थी। उन्होंने कमर से पच्चीस रुपये निकालकर मनोहर को दिये और कहा, सवेरे रेल से तुम अपने बाप के पास चले जाओ, मकान में हम खबर भिजवा देंगे, देख-रेख किये रहेंगे, यह मामला तूल पकड़ेगा। मनोहर ने मंजूर कर लिया। कहा, किसी कारण मेरी कहींकी गैरहाज़िरी किसीको खटके तो भी आप समझा दीजियेगा, कोई चिन्ता न करें, मैं अम्मा की बात भी पूरी करने के प्रयत्न में हूँ।

ज़मींदार ने इसका सम्यन्ध भी अपने अनुकूल लगाया।



छठी नज़र

रामसिंह के पास कोई आदमी न था। वह मील भर के फ़ासले के गाँव राजपुर पैदल चले गये। आल्हे की कड़ी ख़त्म होने के बाद उनका जी डरा कि कहीं नीचा न देख जाना पड़े। घर में कह गये थे कि अखाड़ा नहीं लगेगा।

गाँव में पूछने पर मालूम हुआ, मनराखन तीतर को दीमक चुगवा रहे हैं। पूछते-पूछते वह बाग़ों के उस पार वाले किनारे की बाड़ियों में मिलते हुए दीमक के ठिकाने पर गये। मनराखन से बातचीत हुई। ज़मींदार की आदत जैसी, मनराखन बंदगी-सलाम के बाद ख़ामोश रहा। रामसिंह ने ठकुरई चाल से प्रश्न किया, कहो, मनोहर के क्या हाल हैं ?

मनराखन ने ख़ानदानी मित्रता के नाते जवाब दिया, वह तो गुन्डा जान पड़ता है।

रामसिंह—हमको कुछ ख़ास बातें मनोहर की बतला दो।

मनराखन—उस्ताद हमारा ऐसे ही आदमियों से काम रहता है। टेढ़ी लकड़ी ही हम सीधी किया करते हैं। राज़ हम और कुछ नहीं देते। क्योंकि गाँव के भलेमानुस हैं, टेढ़े पड़े, घुमाये फिराये गये, फिर सीधे हो गये। ज़मींदार की यह रोज़ की क़यायत है।

रामसिंह—हम इसलिये भी आये थे कि तुम्हारा राज है, तो चले चलो, बुला लो, अभी गया न होगा, हम तुमको तुम्हारा राज दे दें। फिर किसी दूसरे जरिये हमारे यहाँ आवेंगे तो यह सबूत काफ़ी है कि तुम्हारी माफ़त वह आये थे।

मनराखन ने समझने की कोशिश की, क्योंकि दुपहर में मनोहर ने उससे कहा था, गाँव के बाहर का राज हमारे रिश्तेदारों का है। रामसिंह के आने का कारण भी उसकी समझ में आ गया कि वहाँ के ज़मींदारों में खटपट हो गई है। वह खामोश रहा। रामसिंह को उससे कुछ भिन्नक हुई। कहा, व्यवहार वह जो न छूटे। दाँव वह जो वक्त पर काम दे। इतने दिनों से हम उसको लड़ा रहे हैं इसके लिये भरोसा तुम्हारा था।

मनराखन—चलो, सिपाही भेजकर बुलवा लेते हैं, और कह देते हैं कि तुमको इनके यहाँ लड़ने के लिये जाना है तो इनकी मज़ी के मुआफ़िक ही रहना होगा, नहीं तो अपना रास्ता नापो।

मेंढ़ के किनारे उकड़ू बैठे तीतर चराते हुये मनराखन ने पींजड़े में तीतर को ले लिया और भूमता हुआ गाँव को चला, साथ रामसिंह।

मनराखन के दरवाजे बैठक जमी। अभी सूरज डूबा न था। सिपाही को हेच-खाया समझकर मनराखन ने एक किसान को बुला लाने के लिये भेजा। तबतक व्यवहार की इधर-उधर की बातें होती रहीं जो कोरी बातें हैं। किसान ने लौटकर खबर दी, मनोहर घर में नहीं।

रामसिंह चलने को हुये। कहा, ज़मींदार का मामला है, भाई, पीठ बचाए रहना। हमारी पीठ लगी तो तुम्हारी भी लगी।

मनराखन ने बढ़ावा देकर कहा, इस मामले में उस्ताद को खूने वाला कोई नहीं। कोई ऊँची-नीची बात गुज़री तो साले को बँधवाकर

भिजवा दूँगा, खातिरजमा रहे ।

रामसिंह को प्रबोध हुआ । कहा, अब सूर्य अस्त होने को है, चलना चाहिये । बड़ा बुरा हाल हो रहा है, और इसी बात को लेकर । बैठे-ठाले एक बला गले लगी ।

मनराखन ने फिर ढाडस बँधाया — एक चड्डी गँठवाते हैं बहुत जल्द । जब उन्होंने हमारा राज नहीं माना तो हमारा अपमान कर चुके । यह है कि अब आगे से होशियार रहना चाहिये कि इस आदमी की पैठ न हो ।

मेहमानदारी बढ़ाने की गरज़ से मनराखन ने एक पासी को बुलाया और गाँव के किनारे तक छोड़ आने की आज्ञा दी । रामसिंह ने इसको राजसी सम्मान समझा । उनको यह न मालूम था कि यह पासी बदमाश है । सीना ताने चले चले ।

ठंडाई छानकर यमुना प्रसाद दो-तीन और आदमियों के साथ उसी सीधे जंगल में गये । निबट चुके थे कि रामसिंह को बागों के भीतर से एक आदमी के साथ आते हुए देखा । पड़ोस के गाँव का पासी, उसको सभी पहचानते थे । लोगों को देखकर पासी वहीं खड़ा हो गया । रामसिंह से दबंग गले से कहा, अब चले जाओ ठाकुर । लोगों ने यह भी सुना । रामसिंह अपने रास्ते चले गये । घर पहुँचकर दरवाज़ा बन्द कर लिया और लड़कों को समझा दिया कि कोई आवे तो कह दें कि अखाड़ा न लगेगा ।



सातवीं नज़र

मनोहर से मिलकर बातचीत करने से पहले ज़मींदार रामराखन का एक और निश्चय हुआ, जब चौपाल में वह बैठे थे, दिया-बत्ती को घंटे भर हो चुका था, यमुनाप्रसाद आए, कहा, पहलवान ने ज़मींदार को मानते हुये भी नहीं माना खासतौर से आपके बारे में। रामराखन ने कहा, हम-तुम एक ही हैं। यमुनाप्रसाद ने जवाब दिया, हम अकेले पड़ते हैं और गाँव के मामले में तुमको बड़ा मानते ही हैं, और तुम्हारी मदद भी हमको दरकार होगी। तुम बात दो तो कुछ खा-पी लिया जाय, और इस सर-चढ़े को ज़मीन भी दिखा दी जाय, मगर अकेले हैं।

रामराखन ने आहिस्ते से पूछा, वह पेंच भी बता दो जिस पर चढ़ा है।

यमुनाप्रसाद ने कहा, जब तुम्हारी पुकार होगी, तुम खुद कुल समाचार सुन लोगे।

यमुनाप्रसाद ने फिर बड़े ज़मींदार की समझाते हुए कहा, भाई देखो, आए तुम हो, हमारा आदमी अब भी हमारा आदमी है। वह तुम्हारा आदमी है, लेकिन इस मामले में तुमसे कट चुका है। उसके खिलाफ़

कोई कार्रवाई करो तो हमसे जरूर पूछ लो । साथ तभी पूरा । नहीं, तो दौब खाली जायगा । गाँव के और दस आदमियों का दबाव होगा, तुम कुछ कहोगे, हम कुछ कहेंगे ।

यमुनाप्रसाद ने फिर दबकर कहा, हमारी कोई शान जमींदारी वाली न रही ?

रामराखन ने ढाढ़स बँधाते हुए कहा, जो हाल तुम्हारा है वही हमारा भी । ज़िले के दूसरे बड़े ज़मींदार के सामने हमारी भी कोई हज़ीक़त नहीं गोफ़ि हमारे सीधे तअल्लुक हैं । ऐसी बात पड़ी तो वह हमसे बातें लेगा । ज़मींदारी के मामले में सवालियों का जवाब देने के लिये जब ज़िले से दो ही एक आदमी खड़े होंगे तब कई मानों में हम नहीं आ सकूँगे । लिहाज़ा बात हमसे कर लो तो बल न पड़ेगा, बल्कि बल बढ़ेगा ।

यमुनाप्रसाद ने कहा, आज मार्के का गठना गठा है । हम देवीप्रसाद और शिवकुमार जंगल गये थे, उस वक्त पहलवान राजपुर के बदमाश बहादुर के साथ चले आ रहे थे । हमसे बातचीत हाने के बाद ही जान पड़ता है वह राजपुर गये थे । वहाँ के जमींदारों से कुछ भला-बुरा कहा होगा । उनका बदमाश पासी साथ लेकर आये । दोनों माथियों ने पासी को देखा है । इतने से कोई मामला गाँठ दिया जायगा तो गठ जायगा ।

रामराखन की लार टपकी । कहा, इधर दो-चार हज़ार इकट्ठे कर लिये होंगे । चलता है तो जैसे धरती धमकती है ।

यमुनाप्रसाद ने कहा, हाँ, पाँचों धी में हैं । आजकल दूनी खुराक है । कड़खे ही बोलता है ।

रामराखन ने कहा, तो मौका न चूकना चाहिये । तुम्हारा कोई आदमी भी है ?

यमुनाप्रसाद ने कहा, शिवकुमार को तैयार कर लिया जाय.

इसने देखा भी है, मुहई हो जाय । हम दोनों गवाही में रहेंगे । एक गवाह को वह जानता है; एक तैयार कर लिया जा सकता है अगर हम गवाही न देना चाहेंगे ।

रामराखन ने कहा, शिवकुमार कमज़ोर है । वादी कुछ मालदार होना चाहिये । अच्छा सुनो, तुम्हारे हल्के में मिश्र जी रहते हैं । हमारे मान्य है और लक्ष्मी की कृपा भी है । तुम चले जाओ, उनको बुला लाओ । तबतक हम मनोहर को समझा लेंगे, क्योंकि पेशवन्दी जरूरी है ।

यमुनाप्रसाद माधव मिश्र को बुलाने के लिये गये । रामराखन मकान के अन्दर अपने घर में गये और चबूतरे पर कसरत करते हुये मनोहर को बुला भेजा । पिछले अंक में लिखी हुई बातें मनोहर से करके अपने पलंग पर आ गये । आधे घंटे के अन्दर यमुनाप्रसाद मिश्र जी को लेकर जमींदार साहब के कमरे में दाखिल हुये । इन तीनों के सिवा वहाँ और कोई न था ।

रामराखन ने आदर से मिश्र जी को बैठाया । सम्मान से उभरते हुये भी, जमींदार-श्रेणी को मिश्र जी काल जैसा देखते हैं । दुनियावी कामकाज में उनकी मान्यता काम नहीं करती और अगर जमींदार के इशारे पर न चलें तो गाँव में महीने भर भी गुज़र न हो; ताजीरात हिन्द के किसी दफ़े के शिकार हों और जेल की हवा खाएँ । कई दफ़े इसी मान्यता के कारण जाते-जाते बचे । ऊँचे दर्जे के ब्राह्मणत्व का ख्याल नहीं । किसी भी मामले में नहीं लड़ता । उसका हकदार मिश्र घराना भगवान तो क्या शैतान के सामने भी झूठ नहीं कह सकता, यह भावना उठ गई है; जैसे एक गाड़ी लीक-लोक चली जा रही हो, यह हाल है । मरजाद के कारण उनको कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता । ज़मींदार दबाने के काम में उनसे हर तरह की मदद लिया करते हैं । बुलावे के साथ उनके होश धिरन हो गए, मगर चीँ-चिपड़ न की ।

रामराखन के नाम से कुछ हिम्मत हुई । साथ चले आये ।

रामराखन पहले यमुनाप्रसाद को एकान्त में ले गये । कहा, आधीरात लोगों की आँख बचाकर अपनी सीढ़ी इनको दे देना, बाहर दीवार में लगी छोड़ देंगे और तीन-चार बजे के करीब चोरों का हस्ला मचा देंगे ।

लौटकर उन्होंने मिश्रजी से कहा, मिश्रजी, ज़मींदारी के कार्य ही टेढ़े हैं । लेकिन मंडप के नीचे थानेदार और डिप्टी क्या, कमिश्नर के बाप भी पैर नहीं रख सकते और वह मान नहीं पा सकते जो आपको मिलता है । आप खातिर जमा रखिये । ज़मींदार का साथ करने वाला, ज़मींदार का आदमी, सरकार के खास आदमियों में है; उसका बाल बाँका भी नहीं हो सकता; कहने के मुआफ़िक़ पाँच सौ कम से कम बताइएगा, बल्कि और ज्यादा । सन्दूक के ताले-वाले तोड़ रखिएगा ।

मिश्रजी अनुभवी आदमी, मुस्कराए । पूछा, किसीकी शक्ल का बयान तो नहीं देना ?

रामराखन हँसे । कहा, मिश्रजी ज़मींदार पर भी एक हाथ रखते हैं ।

स्नेह से कहा, जाँधें दोनों अपनी हैं यह उधर गई तो लाज गई, वह उधर गई तो लाज गई । आप तो जानते हैं बदमाश फँसाना और उसकी निगरानी रखना हमारा काम है; लिहाज़ा कहिएगा कि हट्टा-कट्टा आदमी था । कुछ और भी थे । अंधेरा पाख है; कुछ साफ़ नहीं दिखा ।



आठवीं नज़र

लौटते-लौटते माधव मिश्र ने अन्दाज़ा लगा लिया कि इशारा किसकी तरफ़ हो सकता है। यमुनाप्रसाद ने बनावटी स्वरों को सहज बनाकर कहा, सरकार का काम सरकार ही जाने।

माधव मिश्र मन मसोसकर रह गये। जानते थे कि गाँव के चौकीदार सधे हैं, इन्हींके जोतदार हैं। सिपाही, थानेदार भी इनके दरवाजे उतरते हैं।

जब घर के पास आए, यमुनाप्रसाद ने कहा, रात बारह बजे आकर हमारी सीढ़ी उठा ले जाना, हम इसी जगह डाल देंगे। कह देंगे कि इधर घर चूरहा था, मिट्टी लगाने के लिये सीढ़ी निकाली थी। दिन भर मिट्टी दबाई गई थी। तुम यह न कहना कि सीढ़ी तुम ले गये हो। सिर्फ़ शोर मचाना।

कहकर राम-राम करने लगे और दुबककर घर घुसते हुये भक्ति पूर्वक सुना गए, सरकार का काम सरकार ही जाने। मिश्रजी भल-मनसाहत के कारण मंज़ूर करते हुये दुबककर सोलह आने में एक आने रह गये। अपना जी लिये हुये घर गये और औरतों को समझाया कहीं दीवार न सुन ले, सरकारी काम है, पिछली रात चिल्लाना है।

आधी रात को हम बाहर जायेंगे और लौट आयेंगे । नहीं तो मरजाद न रहेगी ; और बहुत कुछ करना होगा ; लो, समझाए देते हैं ।

एक कोठरी का ताला खोल दिया । बक्सों के ताले तोड़ डाले । भीतर का सामान उठाकर दूसरी जगह हिफाजत से रख दिया ।

लौटकर औरतों से कहा, ए बातें हैं । नहीं तो मरजाद न रहेगी । कैद भुगतना होगा, और भी बेइज्जती हो वह थोड़ी ।

घर में त्रास का वातावरण फैला । सिसकते हुए भी सबके मुँह बधे रहे । इस परिवार में रोटियाँ शाम को ही खा ली जाती हैं जिससे चिराग का तेल बचे । साधारण मजे में हैं । प्रतिष्ठा झूठी पड़ जाने पर भी बचाये रखने की सूरत में रहते हैं ।

लड़के सो चुके थे । औरतें मसान सी जगती रहीं । दस बजा, ग्यारह बजा, बारह बजा ।

माधव मिश्र दबे-पैर उठे और आवाज़ न हो, आहट न मिले, ऐसी सावधानी से दरवाज़ा खोला और बाहर निकले । ज़मींदार की दीवार की बगल रखी हुई सीढ़ी उठा ली और उसी कोठरी के सीधे पिछवाड़े लगा दी । फिर वैसे ही दबे पैर लौटकर लेटे । सारी रात सासत में पार हुई । चार बजे के करीब जोर का रोना-पीटना शुरू हुआ । पड़ोसियों ने सुना, मगर चुपकी साध ली । सबेरा न हुआ था इसलिये उन्होंने निकलना नामुनासिब समझा, डरे कि चोरों में शुमार होगी ।

धीरे-धीरे पौ फटी । लोग जंगल को निकले । ढोर छुटे । रास्ते पर हक्के-दुक्के आदमी का निकलना जारी हुआ । माधव मिश्र सर लटकाकर दरवाजे आ बैठे । भीतर रह-रहकर चीख चलती रही । बाहर के लोगों को अभी तक अच्छी तरह न मालूम हुआ था कि मामला क्या है । माधव मिश्र ज़ाहिरा तौर से कहते न थे सिवा सर पीटने के और यह कहने के कि हायरे छुट गये, करम-दंड है, मरजाद

घूल मं मिल गई, गाँव छोड़कर कहाँ जायँ, हे भगवान, बुरे का सत्यानाश कर, कहाँ सोया है, कन्हैया, गौ-ब्राह्मण बेकसूर सताये जाते हैं, कंस का राज बढ़ा है, हे राम, फिर राक्षस छा गए, डूब रहे हैं भगवन् इस भवसागर में, उबारो, आदि-आदि ।

इससे किसीकी समझ में कुछ न आया सिवा इसके कि माधव मिश्र बहुत दुखी हो रहे हैं । भेद खुलेगा इस डर से लोग मुँह छिपाये इधर-उधर घूमते रहे । औरतों में कानाफूसी होती रही । आदमी मक्कार है, यह सब लोग जानते हैं, गाँव में यह खबर फैल गई कि माधव मिश्र के यहाँ कुछ हुआ है ।

सूरज निकलने को हुआ, माधव ज़मींदार यमुनाप्रसाद के मकान चले । खबर ले जाने वाले वहाँ दो-एक आदमी और थे । ज़मींदार ने माधव को देखते ही पूछा, क्या माजरा है, मिश्र जी ?

माधव मिश्र ने कहा, मालिकों, कहीं के न रहे ।

ज़मींदार ने लोगों से कहा, भाई, बड़े आदमी का मामला है, इसको देखना-भालना है । हाल मालूम हो जाने पर आप लोगों से राज़ खोलें ।

यह कहकर तुरन्त बढ़े और रास्ते पर ही माधव मिश्र को लिया । और आओ, आओ, कहते हुये मकान की ओर न आकर गलियारे की ओर बढ़े ।

लोग चौकन्ने थे कि न जाने कौन सा पहाड़ टूटे, आपस में बन लेंगे तब बनाकर हमसे कहेंगे ।

चौपाल की चारपाई से लोग-बाग उठकर अपने घरों की ओर चले । यमुनाप्रसाद माधव मिश्र को लिये हुए गलियारे-गलियारे रामराखन के मकान आए ।

रात भर पं० रामराखन को भी नींद नहीं आई, कुकुर-निंदिया की तरह दो-एक भपकियाँ लीं, बाक़ी सारी रात इसको फाँसने और

उसको खोलने में बीती ।

धनी वर्ग की आमदनी का उपाय देहात में यही है । कौन परदेशी है, कितना कमा लाया, कौन किसान आलू या गन्ने की खेती से दो-चार सौ रुपये जोड़ चुका, कौन दुकानदार अपने व्यवसाय में क्रायदा उठा रहा है, ये लोग पूरी जानकारी रखते हैं । उनके घरों के जवान बेटी, बेटों, पतोहू और दामादों के फँसाकर रिश्त ले-लिवाकर या, मुकदमे लड़वाकर या गवाहियाँ दिलवाकर अपनी जेब भरते हैं ।

रामराखन दातौन-कुल्ला कर चुके थे । दरवाजे पानी सोखने का दाग बना था । यमुनाप्रसाद और माधव मिश्र को सामने की दूसरी चारपाई पर बैठाला । यमुनाप्रसाद ने कहा, काम हो गया ।



नवों नजर

मनोहर को रात तीन बजे रामराखन ने जगा दिया । समझा दिया, गाँव के स्टेशन पर न चढ़कर अगले स्टेशन पर चढ़े । चार कोस के फ़ासले पर है । सबेरे पहुँच जायगा । आठ बजे गाड़ी वहाँ पहुँचती है । उसीसे रवाना हो जाय और छः महीने तक कम-से-कम गाँव में मुँह न दिखाए ।

मनोहर आग-बबूला था ही । उठकर मुस्तैदी से चल दिया । सरायन के किनारे से कच्ची सड़क गई है, उसीको पकड़े हुये चला । बरसात में उसकी हालत अच्छी न थी, जगह-जगह गड्ढे पानी से भरे थे, मगर रास्ता-चलनेवाले के लिये राह निकल आती है मनोहर पैर बढ़ाता गया । पौ फटते-फटते आधा रास्ता तै कर डाला । उसको मालूम था, इस प्रान्त में बड़े जंगली जानवर का डर नहीं, फिर भी भेड़िये कहीं-कहीं बरसाती नदी और नालों के किनारे माँदों में रहते हैं । एक डंडा लिए सजग राही, क्रिस्मत का मारा हुआ चलता गया । कसरती जवान के लिये चार कोस का फ़ासला कोई दूरी नहीं । ऐसे बज़ातों से रिश्ता छूटा, इसकी खुशी भी उमड़ पड़ती थी ।

उसको पछाँह वाली गाड़ी से जाना था बम्बई के लिये । वह गाड़ी

तीन घंटे पूरबवाली गाड़ी के बाद आती थी। पूरबवाली का समय उसके स्टेशन पहुँचते हो गया। उसने देखा, सुबह की सुर्खी के साथ छोटे से सुर्ख स्टेशन के मुसाफिरखाने में पूरब जाने वालों की भीड़ लगी है। वहीं तीन-चार खोंचेवाले भी बैठे हैं, किसीके पान और बीड़ी, किसीके पेड़े और बर्फी, किसीके तेल के सेव और चने भुने हुए लगे हैं। बाहर स्टेशन की तरफ नीले फूल की लता चढ़ाई हुई सारे स्टेशन की दीवार पर छतर रही है। कई कुत्ते परम परिचितों की तरह बैठे देख रहे हैं। सामने फैला हुआ ऊसर। दूर तक निगाह चली जाती है। बीच में ऊसर का छोटा मगर पुराना बरगद का पेड़ देख पड़ता है, जिसके एक बगल एक बारहदरी है और दूसरी बगल एक पक्का कुआँ, सामने तालाब। आते हुए यात्रियों का ताँता और गाड़ियाँ देख पड़ती हैं।

घंटी हुई। सिंगनल गिरा। टिकटवाला दरवाज़ा खुला। टिकट लेने वाले मुसाफिर एक दूसरे पर चढ़ गये। मनोहर खड़ा देखता रहा। उसको पछाँह जाना है। कुछ देर बाद मंसूबा पलटा। बम्बई के कारनामों याद आये। ज़लालत से नसों में खून दौड़ने लगा। सोचा, क्या बम्बई में मुँह दिखाये, बाप की आँख का काँटा हो या धनिकों के जाल में फँसे ?

हरादा पलटा। खून की तेज़ी धीमी नहीं पड़ी। अपने आप पैर उठे। यात्रियों के पीछे एक तरफ़ खड़ा हो गया। वे टिकट लेकर बाहर निकले। एक ने टिकट दिखाकर कहा, नम्बरदार, देखो तो, टिकट कहाँ का है। मनोहर के जले पर नमक पड़ा। मगर उसने यह न कहा कि वह नम्बरदार नहीं। न यही कि वह टिकट न देखेगा। नम्बरदार के लिये चढ़ी चढ़ को दबाकर धुँधले प्रकाश में पढ़कर टिकट दे दिया। यात्रियों के बढ़ने के साथ बढ़ता गया। भरोखे के पास पहुँचकर बिना कुछ सोचे कहा, बनारस के लिये एक टिकट। एक नोट पाँच रुपये का

दिया । टिकट के साथ कुछ पैसे वापस मिले लेकर बाहर निकला । पान खाये, स्टेशन पर टहलता रहा, गाड़ी डिस्ट्रिक्ट सिगनल पारकर आई । यात्रियों की भीड़ बढ़ी । बैठे लोग खड़े हो गये । गाड़ी प्लेटफार्म पर आ गई । मनोहर बिना कपड़े-लत्ते के, बिना लोटे थाली के, एक जादू का मारा जैसे, खिड़की खोलकर एक डब्बे में बैठ गया ।



दसवीं नज़र

बातचीत तय हो गई कि पहलवान रामसिंह से पाँच सौ रुपये लिये जायँ। यमुनाप्रसाद बुलाकर आपस में तय कर लें। अगर पहलवान रामसिंह राज़ी न हों तो रपोर्ट कर दी जाय।

अभीतक चौकीदार के कान में बात न पड़ी थी। वह इस मामले से नावाक़िफ़ था।

यमुनाप्रसाद गाँव के भीतर गये और धीमे गले से पहलवान को आवाज़ दी। पहलवान भीतर थे। ज़मींदार का गला समझकर बाहर निकल आए। यमुनाप्रसाद उनको बुलाकर गाँव के बाहर एक पेड़ के नीचे ले चले। छाँह में दोनों बैठे। यमुनाप्रसाद ने कहा, “पहलवान, ज़मींदार का मामला है, सरकार भी ज़मींदार है, आपका पख लेने के लिए आपका रिश्तादार राजा रईश कोई गाँव में खड़ा न होगा। मामलेदारी में उसकी कोई गवाही काम न देगी।

पहलवान लचे। जी से घबराये। कहा, “मामला तो हमको कुछ मालूम नहीं। राय हम इसपर क्या दें ?

“राय नहीं। रुपये चाहिये। पुलिस के हाथ अब जाने ही वाला है। तब दूने से ज्यादा पर कहीं छूटियेगा।”

“देखिये, बिना कुसूर के अगर सज़ा भी हो जायगी तो काट लेंगे ।
और क्या कहें ?”

“तो पहलवान, सज़ा ही होगी । ज़िन्दगी भर के लिए दागी बन जाइयेगा । फिर ज़मींदार ही का सहारा ढूँढ़ना होगा और गाँव में ।”

“इतने दबकर तो कभी नहीं रहे । अब मालूम भी नहीं कि माजरा क्या है, तब क्या हाँ करें या और क्या नहीं ? आप माजरा बतला दीजिये । हम आपको सही जवाब देंगे ।”

“भाई, बात हमारी हो तो कहें । दुनिया-भर जुत गई, अभी मौसम का रंग ही नहीं मालूम । कहीं भी जाइयेगा, राज़ ही मिलेगा । अपने घर में तो पक्की बात ले लीजिये ।”

“तो हमारे घर हरसिंगार के फूलों की तरह रुपये नहीं बिछ जाते । हम बिछा कहाँ से दें ? अगर पुलिस के पेच में आ गये और अपने को बेकसूर पाया तो आगे दुश्मन से बदला निकाल लेंगे । ठाकुर होकर और कौन-सी सच्चाई वाली बात कहें ?”

“तो, कहो तो हम चलें । देर हो रही है ।”

पहलवान बहुत विकल हुए । ज़मीनोंआसमान के कुलावे मिलाने लगे मगर जोड़ नहीं बैठा जैसे जंगल में भटकते फिर रहे हो । पहलवान के आँसू बड़ी करुणा से निकलते हैं । रामसिंह के दोनों गालों से बड़े-बड़े आँसू टपकते रहे । उन्होंने कहा, “कहीं इतनी भी लकड़ी तो पकड़ाई होती ! रपोट करने वाला कौन है ? हमने कौन-सी ख़ता की ?”

“पहलवान, यह अपने-आप से पूछिये । मगर हमारी माफ़त यह रुपये आप दे देंगे तो मामला ले-देकर दबा दिया जायगा, नहीं तो आप फसेंगे और गाँव में आपका मददगार न खड़ा होगा । हमको यह भी दुख है कि आपकी भलमनसी में बट्टा लगते देखकर भी हम किनारा

किये रहेंगे, क्योंकि पानी में रहकर मगर से बैर हम न करेंगे। इसीलिये कहते हैं कि जब फाँसी गले लग चुकी है, बुरा फ़ैल तैयार हो गया है, मामला सही हो या ग़लत, तो पुलिस के हाथ जाने के पहले उसकी पायेदारी मार दी जानी चाहिये, नहीं तो इस फाँसी से छुटकारा न होगा। आपको किन्होंने फँसाया, किन्होंने नहीं, यह पुलिस से आप मालूम कर लीजियेगा, क्योंकि वहाँ वादी पहले रपोट करने के लिये जायगा।”

रामसिंह ढाढ़ें मारकर रोने लगे। यमुनाप्रसाद के पैर पकड़ लिये। कहा, “मालिक, हमसे ख़ता हुई, हमने आपके सामने सर उठाया। हमारी इज़्ज़त बचाइये। यह ताब हममें नहीं कि सैकड़ों का भौंका सह जायँ। हम मिठाई खाने के लिये दो चार रुपये की चपेट सह लेंगे।”

यमुनाप्रसाद ने आँखें ढोरीं। कहा, “पहलवान, मामला हमारा नहीं और अब बिल्कुल वक्त नहीं रहा। अगर चार सौ रुपये पर आ जाइये तो हम बातचीत करें।”

पहलवान का फिर पैर मज़बूत हुआ। कहा, “जबकि आप किसीके भेजे हुए आये तो इतना बता दीजिये कि वह कौन है।”

यमुनाप्रसाद ने कहा, “यह हमको नहीं मालूम, क्योंकि मारफ़्त...”

पहलवान ने कहा, “तो या तो थानेदार ही ले जायँगे या बरी होंगे या काट लेंगे, मगर यमुनाप्रसाद, इस मामले को समझकर ही हम जवाब देंगे जो ठाकुर का असली जवाब होगा। हमारी आँख से दोस्त और दुश्मन भी गुज़र जायँगे। निगाह साफ़ हो जायगी। तब कहाँ वार करना चाहिये कहाँ नहीं, हमारी समझ में आ जायगी।”

यह कहकर घृणा से पहलवान चल दिये। यमुनाप्रसाद भी दूसरे रास्ते से रामराखन के दरवाजे की तरफ चले।



ग्यारहवीं नज़र

ताल पड़ गई कि माधव मिश्र से रपोट करा दी जाय । गाँव का चौकीदार मातादीन साथ कर दिया गया ।

माधव मिश्र सत्तू बाँधे रहनेवाले आदमी रपोट करने चले । आगे-आगे बँधाई लाठी लिये चौकीदार मातादीन मारे खुशी के फूला नहीं समा रहा । जानता है, आजकल में सैकड़ों के बारे-न्यारे होंगे; गाँव और पड़ोस के कितने ही भले-बुरे आदमी फसेंगे; मिलने-बिछुड़ने की कितनी बातचीत होगी; कितने दौड़पेंच खिलेंगे-खुलेंगे । ज़मींदार और महाजन भी इस रुपये में शरीक होंगे; कहते हैं, रिश्वत का रुपया लाखों और करोड़ों तक पहुँचता है और बड़े-से-बड़ा इसका साभ्नीदार है; इस काम में पुलिस के मददगार जितने आदमी हों, वे सरकार के आदमी कहे जाते हैं; उनसे इसी तरह के काम लिये जाते हैं; जब कमज़ोर पड़े तब वे नेकमाश धीरे-धीरे बदमाश करार दिए जाते हैं और बाँधकर भेज दिये जाते हैं; आमदनी का ज़रिया जेल में भी है; मजे में क़ालीन बिनते रहें; दस पैसा खाय और दो रुपया उगले, क्या चरखा है ! मातादीन मनही-मन मुस्कराया ।

मिश्रजी भी चलते-चलते अपनी ढाई-चावलों की खिचड़ी पकाते

रहे। वह सरकार के आदमी हैं, इसपर उनको फ़ख भी हैं। उनकी मरजाद का एक बाल भी नहीं टूट सकता। यह सरकार हिन्दुस्तान में इसीलिये है और इसी ढर्रे से चलाकर बाघ और बकरी को एक घाट पानी पिलाती है। रपोट के दो रुपये जो लिये हुये थे, वे ज़मींदार रामराखन के दिये हुये थे। उनकी याद आते ही उन्होंने कहा, “देखो मातादीन, रपोट में दो रुपये लगेंगे। यहींसे श्रीगणेश है। यह दो-दो-सौ पर ख़त्म होता है या दो-हज़ार पर;—इस गाँव में और गुब्बाइश तो है नहीं, नहीं तो दो लाख भी कहते, दो करोड़ भी; यह आँख के सामने आयेगा।”

मातादीन ने तम्बाकू ठोककर खाई और कहा, “हमको तो बीस से ज़्यादा की गिनती ही नहीं आती, करोड़ के आगे और क्या है?”

माधो मिश्र ने कहा, “और आगे का हिसाब नहीं लिखा जाता। यों तो शंख-महाशंख तक है।”

मातादीन ने कहा, “जैसे गाँव का रहनेवाला शहर का हिसाब नहीं जानता, वैसे ही थाने का हिसाब थाने ही के आदमियों को मालूम है। जहाँतक तुम गिनती गिनाते हो, उससे और आगे तक हिसाब पहुँचता है।” यह कहकर मातादीन गम्भीर हो गया। फिर तम्बाकू की एक पीक थूकी। मिश्रजी ने सोचा, यह इस वक्त लाठी और साफे के साथ है, कौन इसके मुँह लगे?

दोनों पगडंडी पकड़े हुये बढ़ते गये। एक बग़ल बाग़ों की क़तार, दूसरी बग़ल खेत। बाग़ों से चिड़ियों की चहक सुन पड़ती हुई। ग़लारें, तांते, बुलबुलें, पिड़कियाँ, रुकमिनें, सतभैए, कौवे, पपीहे और कोयलें अपनी-अपनी डाल से अपनी-अपनी बोली सुनाती हुई। खेतों पर कहीं-कहीं हिरनों के भुण्ड भगते हुये। कहीं ढोर चरते हुए। कहीं नाले, कहीं बरसाती नदी। किनारों में बबूलों के बेशुमार पेड़। काँटों से कहीं-कहीं पगडंडी रूंधी हुई। थूहड़ के पेड़ बाग़ों की खाई

के चारों तरफ़ लगे शोभा बढ़ाते हुए ।

दिन डेढ़-पहर चढ़ आया । सामने पक्का तालाब दिखा । एक तरफ़ विशाल शिवालय जिसकी दूसरी तरफ़ पक्का कुआँ । मिश्रजी ने मातादीन से कहा, “या तो तुम चले चलो, थाना नज़दीक ही है, चलकर आराम करो, हम हाथ मुँह धोकर थोड़ा सा पानी पी लें, वहाँ फिर लिखाने के भंभट में पड़े'गे, चित्त ठिकाने नहीं, कुछ का कुछ न कह जायँ, हाकिम का सामना ठहरा या ठहरो ।”

मातादीन ने कहा, “बड़े आदमी होकर बदल रहे हो । हम तो साथ ही हैं । जो खाओ हमको भी खिलाओ । हम तुमको छोड़कर कहाँ जायँ ?”

मिश्रजी ने हाथ-मुँह धोये और मिली पाँच भेलियों में बड़ी-बड़ी दो भेलियाँ गुड़ की निकालीं । एक अपने लिए रखी, एक मातादीन को दी । मातादीन हराम का माल लापरवाही से गले के नीचे उतारने लगा । मिश्रजी भी निःसकोच होकर गुड़ की भेली खाने लगे । दोनों ने खाकर पानी पिया, फिर थाने के लिये खाना हुये ।

थाने की लाल दीवार दिखने लगी । सड़क के किनारे के पेड़ों की आड़ थी, मगर पेड़ियों की दरार से निगाह पहुँच जाती है । मातादीन का वीरत्व थाने के दिखने के साथ-साथ बढ़ गया । मिश्रजी अभ्यासी मनुष्य की चाल से चलते गये ।

थाना आया । दोनों अहाते के अन्दर गये । चौकीदार ने मुन्शी को सलाम किया ।

मुन्शी ने पूछा, किस मौजे के हो ?

चौकीदार ने कहा, हुजूर, सरायन का ।

मुन्शी ने पूछा, और यह कौन ?

चौकीदार ने जवाब दिया, वहीं के ब्राह्मण रपोट कराने आए हैं ।

मुन्शी जमे । कैंची निगाह से एक दफ़े मिश्रजी को देख लिया, फिर कहा, इधर आओ । मिश्रजी बढ़े और झुककर सलाम किया ।

मुन्शी ने कहा, लाओ, यह पहली सरकार का है ।

मिश्रजी ने कहा, अभी दिया क्या ?

डाटकर मुन्शी जी ने माँ की गाली दी ।

मिश्रजी ने कहा, यह एक दूसरी रपोट होगी ।

मुन्शी पहले घबराये फिर उठकर चले गये । सोचा था, बैठा रहेगा, झुक मारेगा, रपोट लिखायेगा ।

उठकर अपने डेरे की तरफ़ चले तो चौकीदार ने बढ़कर एकान्त में कहा, आप पुलिस का राज़ बिगाड़ते हैं, हम उसी गाँव में रहते हैं या और कहीं ? मुन्शी भौंप सँभालकर सर गड़ाये हुए चले ही गए ।

चौकीदार थानेदार के पास गया । थानेदार ने मिश्रजी को बुलाया और पूछ-ताछ की । मिश्रजी ने कहा, अब पहला मामला तो यही है कि थाने आने पर गालियाँ मिलती हैं या यह मुन्शी जी किसी फेर में हैं ?

थानेदार ने कहा, खैर, कल हम आपके गाँव आयेंगे और तहकीकात कर जायेंगे । जब चौकीदार को आप लाये तो रपोट हो चुकी ।

चौकीदार का नाम लेकर पूछा, क्या रपोट वाले रुपये ले लिये ?

मिश्रजी ने कहा, गाँव में आप लीजियेगा ।

थानेदार के चेहरे पर शिकनें पड़ीं, मगर चुपचाप बैठे रहे ।

मिश्रजी थाने से बाहर निकल आये और गाँव का रास्ता पकड़ा ।



बारहवीं नज़र

गाँव लौटते मिश्रजी का चौकीदार से साथ छुट गया। थाने में चौकीदार ने तरह-तरह की सच-भूठ बातों का थानेदार से राज़ खोला जिनमें गाँव के बाशिन्दों की शिकायत ज्यादा थी। सरकारी पक्ष को प्रबल किए हुए था। मुसलमान के प्रति, उसके बड़प्पन के हक के कारण ईर्ष्या भी थी, साथ ही वह यह भी समझता था, सरकार मुसलमान के खिलाफ़ बातचीत कराना चाहती है और जब कि एक मामला आँख का देखा गठ चुका है, तब इसको छोड़ना बेवकूफ़ का काम होगा। ईश्वर की कृपा से थानेदार भी मुसलमान थे, छोटे थानेदार हिन्दू थे, ठाकुर। इन्स्पेक्टर हिन्दू थे। मातादीन इन्हीं कड़ियों से चढ़ता था। जी खोलकर उसने मुन्शी हकीकत अली खाँ की शिकायत की। मारे गरमी के वह रपोट न लिखकर गालियाँ देते हुए कुर्सी छोड़कर चल दिए, कहा। यह भी कहा कि वह ब्राह्मण पानीदार हैं, तअज्जुब नहीं कि दरखास्त कर दे। और भी बहुत तरह से डरवाया। थानेदार ने कहा, राज़ रख दो।

चौकीदार ने कहा, राज़ मुन्शी जी को दे चुके हैं। आप मुन्शीजी से हमारा राज़ दिलवाइये।

थानेदार ने कहा, मैं थानेदार हूँ तो दूसरा ही चौकीदार आयेगा ।

मातादीन ने जवाब दिया, मैं ढाई रुपये की नौकरी के मत्थे नहीं हूँ, दुहाई इसपट्टर साहब की; और आपसे कहता हूँ कि अगर उस मौजे में अपनी बल्ली गाड़ लें इस मामले में बिना मेरी मदद के, तो मैं अपने बाप का पैदा किया हुआ मातादीन नहीं ।

इस तरह थाने में खासी बमचल रही ।

मिश्रजी गाँव लौटकर किसीके यहाँ न गये, ठंडे होकर थोड़ा-सा पानी पिया और पहलवान के दरवाजे की तरफ चले । हथेली के इशारे पहलवान को बुलाया । वह चौपाल में चुपचाप बैठे सोच विचार में थे । इशारा देखकर मिश्रजी के पास उठ आए । मिश्रजी उनको लेकर नज़दीक के बाग़ की तरफ गये । एक महुवे की छाँह में बातचीत करने लगे, कहा, पहलवान, हम-तुम एक ही गाँव में रहते हैं, एक दूसरे की मदद के लिये हैं, दुश्मनी के लिये नहीं । दुश्मनी कराई जाती है, नहीं तो बेइज्जती होती है । और हम कुछ कह नहीं सकते, मगर जो कार्रवाई ख़िलाफ़ हो, आप उसीकी समझें जो बड़ा है ।

पहलवान के आँसू आ गये । कहा, भैया, एक जगह रहने का यह हाल है ! कुछ हमको भी नहीं मालूम, नहीं जानते, कौन-सी लकड़ी फेरी जानेवाली है । जितने लोग आते हैं सब बात-लेनेवाले, इज्जत लेनेवाले ।

मिश्रजी ने कहा, जाल-ही-जाल में हम-तुम जितनी मछलियाँ हैं फँसाई और निकाली जाती हैं । जितना बैर बढ़ता रहेगा, ज़मींदार और सरकार को उतना ही फ़ायदा है । बात की जड़ बेबात-की-बात से पड़ती है । इसके बाद बातों का ही जाल फैलता है । क्या आपसे किसीसे लाग-डाँट थी ?

पहलवान पशोपेश में पड़े । देखा, यहाँ भी राज़ देना है । कहा,

उस गाँव का एक लड़का लड़ने आता था, या तो वह दुश्मनी की गुरज से भेजा गया, या उसके आने पर उसके लोगों को बुरा लगा, और हमारी समझ में कुछ नहीं आता ।

मिश्रजी ने कहा, आप हमको मानते हैं, सारा गाँव हमको मानता है । मान्य का काम यह नहीं होता कि वह अपने बन्धुओं को फँसाये । हम आपसे इतना कहे देते हैं कि हमारे जितने बयान होंगे उनमें आप अपने कां न समझें और यहाँ आप हमारे साथ आएँ, यह किसी दूसरे से न कहें, दूसरों को ही कहने दें । हम आपके दुश्मन नहीं, यहीं से जाहिर है । गाँव के दो-एक हमको-आपको देख भी चुके होंगे । उन्हीं को कहने दीजिये । अगर हमको कहियेगा कि बुला ले गये थे तो इससे आपका न भला होगा और न इस पंजे से छुटकारा, क्योंकि यह पंजा ही ऐसा है जो कभी किसीको छोड़ता नहीं । जाइये, हम जंगल जा रहे हैं, इस तरह दूसरों को भी हमको खुश करना पड़ता है, उनका रुख देखना पड़ता है और उनकी बात भी माननी पड़ती है ।

पहलवान को दिल में बल मिला । मिश्रजी भीटों के आगे वाली तलहिया के किनारे मुँह-अँधेरे निपटने के लिये गये ।

रात को भोजन-भाव करके मिश्रजी रिश्तेदार ज़मींदार के यहाँ भी हो आये । कोई बातचीत न की, कोई राज़ न दिया, सिवा इसके कि कल थानेदार आयेंगे । रामराखन को इतने से पूरा हाल जैसे मिल गया । गम्भोर मुद्रा से विचार करने लगे । मिश्रजी ने कहा, हम बहुत थके हैं, अब हमको आराम करना है ।

जमींदार ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया, मिश्रजी ने आशीर्वाद देकर रास्ता नापा । घर पहुँचकर दो रपोटें लिखीं, एक इन्स्पेक्टर के नाम, दूसरी कप्तान पुलिस, के नाम । कागज़, क्लम, दावात घर में तैयार थे, रपोटें पूरी करके सिरनामे लिखकर रात ही को पास के

लेटर-बॉक्स में छोड़ आये । ब्राह्मण का ताव, सोचा कहीं सबेरे तक
टंडा न हों जाय, जहाँ सत्यानाश वहाँ साढ़े सत्यानाश । मिश्रजी
मुन्शी का नाम जानते थे । उनका काम ही इस हल्के का परिचय
रखना था ।



तेरहवीं नज़र

दूसरे दिन आठ बजे दो सिपाहियों के साथ थानेदार आये । धर्मशाले में उतरे । गाँव के ज़मींदारों को बुलाया । चारों ओर हल-चल मच गई । सबको निश्चय था कि रपोट हो चुकी है । मातादीन थानेदार से सहमत होकर भी न हुआ । गाँव भर में उसने भी अपनी दो-रंगी उड़ाई थी । मजदूरों से अच्छे-अच्छे पलंग दो-तीन उठवाकर ज़मींदार रामराखन ने भिजवा दिये साथ क़ालीन । घर में पूड़ी और साग का नास्ता बनाने के लिये कह गये । थानेदार को यह खाना पसन्द नहीं, मगर हिन्दुओं के गाँव में मुसलमान पकानेवाले के-न होने पर यह खाना स्वीकार कर लेते हैं, साथ, कह भी देते हैं, हमारा खाना तो आप लोगों का मालूम है, वगैर उसके मज़ा नहीं आता, न पेट भरता है ।

तीन-चार पीपल, पाकर और महुवे के पेड़ धर्मशाला के आस-पास हैं । कुछ ही दूर एक पक्का तालाब, पक्का कुआँ स्वच्छ जलवाला धर्मशाला के साथ लगा हुआ है । बग़ल में लड़कों ने एक अखाड़ा गौड़ रखा है कूदने के लिये । पीपल के नीचे चबूतरा है जिस पर पीपल के जड़ के साथ शिवजी रखे हुये हैं । गाँव का यह एक सबसे

अधिक मनोहर स्थान है। यहाँ से तीन-चार लीकें दूसरे-दूसरे गाँवों को कटकर गई हैं। अगल-बगल खेत और बागात हैं। दिन का दृश्य बड़ा ही सुहावना हो रहा है। खरीफ़ की हरियाली मनको मोहे ले रही है। पुरवाई के भोंके मतवाले किये जा रहे हैं। कुछ ही फ़ासले से गाँव शुरू है। पेड़ों पर बुलबुल, तोते, रुकमिनें, गलारें, कबूतर आदि चहकते और गटरगूँ करते हैं। आम की कुब्जों से परीहे और काँयल की होड़ सुनाई पड़ रही है।

थानेदार ने यहाँ डेरा इसलिये जमाया कि अपना दल यहाँ तैयार करलें, तब मामले में हाथ लगायें। चौकीदार से जो कुछ उनको मालूम हुआ था वह बहुत पायेदार बात न थी, दूसरे, मुन्शी के ज़रा चले जाने पर रपोट लिखानेवाले मिश्र का थाना छोड़कर चला जाना शक पैदा कर रहा था। फिर भी पुलिस पर कोई आक्षेप न हो इसलिये उन्होंने तहक़ीक़ात करनी चाही मगर छिपे तौर से। चौकीदार के कहने के अनुसार सिपाहियों ने मुख्य-मुख्य आदमियों को बुलाया। सधे लोग कौवे की तरह एक दूसरे को देखते हुये आगे-पीछे चले।

चौकीदार एकान्त समझकर मिश्रजी के पास गया और दोनों हाथ से बिल दिखाकर थाने की मनोभावना समझाई, और हिम्मत दँधाते हुए कहा, ठीले न पड़ना। कहकर चला गया।

मिश्रजी एकान्त देखकर पहलवान के यहाँ गये और बाहर से आवाज़ दी।

बुलाये जाने पर सिपाही की पगड़ी देखकर पहलवान को जूड़ी चढ़ आई थी। जब मिश्रजी ने आवाज़ दी, उन्होंने डरभूते स्वर से रज़ाई के भीतर से कहा, अरे, जूड़ी चढ़ी है, क्या काम है! घर में कोई नहीं है।

मिश्रजी ने कहा, ओढ़े-ओढ़े चले चलो। नहीं तो मामला समझ में

न आयेगा, दोस्त और दुश्मन की पहचान जाती रहेगी । हम आगे-आगे चलते हैं । हमारे तरफ़दार रहना ।

पहलवान ने आवाज़ दी, जब तुम कहते हो तब चलेंगे । रज़ाई की जगह चदरा ओढ़ लेंगे । कहकर ज़ोर बाँधा कि मददगार है ।

रामराखन अपने पूरे सहायकों के साथ मामले को साधकर आगे पीछे चले, रामराखन, लीलाराम, रामशंकर, यमुनाप्रसाद, देवीप्रसाद, शिवकुमार तथा गाँव के और-और ज़मींदार और महाजन । एक-एक करके पलंग पर बैठे हुये थानेदार के पास पहुँचे और कमर भर झुककर सलाम करते गये; फिर दूसरी चारपाइयों पर अदब के साथ बैठते रहे । गोड़हत लोगों को तम्बाकू खिलाता और हुक्का पिलाता रहा । थानेदार के कहने के माफ़िक, अभी यह सरकारी काम नहीं, गाँव के लोगों से थानेदार की आपसी बातचीत है ।

इसी बीच मिश्रजी आये और साधारण रूप से थानेदार को सलाम किया ।

यहाँ मिश्रजी का बड़प्पन रामराखन की नज़र में आनेवाला नहीं और जब कि वह मुहई है । उन्होंने मिश्रजी को बुलाकर नहीं बैठाया, यह बात मिश्रजी को खटकती । मगर कुछ बोले नहीं । संसारवाली नस दबाये हुए, होश दुरुस्त किये हुए, धर्मशाला के चबूतरे पर सबकी तरफ़ मुँह करके बैठे । उनके बड़प्पन की तरह यह चबूतरा भी चारपाइयों से ऊँचा था । तेल लगाने के सहज स्वभाव से रामराखन ने हाथ उठाकर कहा, सरकार के सामने इस आसन से ऊँची जगह ऐसी हालत में मिश्रजी आपको न बैठना चाहिये ।

मिश्रजी ने कहा, अगर आप इस चारपाई को उठाकर धर्मशाले में ढाल दें, और थानेदार साहब बैठें तो और शोभित हो जाय । थानेदार को मुसलमान समझकर मिश्रजी ने ज़मींदार पर धार्मिकता का एक हाथ रखा ।

जमींदार खामोश रह गये। उन्होंने सोचा, मुसलमान को हिन्दू धर्मशाला में घुसेड़कर लोगों की निगाह में हमको गिराना चाहता है। कुछ नज़र बदली, मगर अन्दर से डरे कि मामला उन्हीं का गठाय हुआ है कहीं यह उल्टा खुदाई न गले डाल दे। दबकर ढाढस बँधाते हुए कहा, बैठे रहिये, जैसे चारपाई वैसे चबूतरा।

थानेदार बातचीत तोलते रहे। इसी समय चदरा ओढ़े कोट पहने काँखते हुए पहलवान धीरे-धीरे आये, और जहाँ मिश्रजी बैठे थे उसी जगह, एक किनारे से थानेदार को दूर का सलाम करके, बैठे। उनको निश्चय था, यह गठना उन्हीं पर है।

एक चरपाई पर सिपाही बैठे थे। गाँव के तीन चौकीदार लाठी लिए हुए अगल-बगल खड़े थे। इक्के-हुक्के लोग जो राही थे या जिनका मामले से तअलुक्क न था आते-जाते रहे।

थोड़ी देर में जमींदारों वाली चारपाई के एक-एक पाये के पास पान-दोहरा खायों की तम्बाकू की पीक से बित्ते-बित्ते भर ज़मीन रंग गई। गाँव में भीट, गाँव के तमोली, कई रोज़ की तैयारी, सैकड़ों की संख्या में लगे पान लौंगदार ले आये। इलायची-दोहरा और ज़रदावाली तस्तरियाँ भी दो-तीन। सिपाहियों ने पत्ते चबानेवाले बकरो को मात किया। झूठ के मामले में जमींदारों की चौगुनी फुरती थी।



चौदहवीं नज़र

थानेदार देखते हुये जातीय सभ्यता के अनुसार ऊबकर, लोभ के ढंग से चले, सरकारी आज्ञा की हथेली से सिपाहियों को बुलाकर, एक किनारे आपसी बातचीत करने के लिये। यहाँ ऐसे मामलों की तहकी-क़ात में ज़मींदारों और मुद्दई-मुद्दालों से सिपाही बातचीत करते हैं, लेन-देन तय करते हैं। कुछ दूर चलकर, कान में बतलाकर, थानेदार लौट आये और बैठे। एक सिपाही ने यमुनाप्रसाद को और दूसरे ने रामराखन को बुलाया। अलग-अलग दोनों की बातचीत लेकर अलग-अलग थानेदार से कहेंगे। उनके सिवा दूसरे को एक दूसरे की बातचीत मालूम न होगी। सिपाहियों ने तदनुसार दोनों को बुलाया, दो भिन्न दिशाओं में ले चले और पूछने लगे।

उत्तर तरफ़ यमुनाप्रसाद वाला सिपाही और दक्षिण तरफ़ रामराखन वाला था।

यमुनाप्रसाद वाले ने एक दफे मूछों पर ताव देकर यमुनाप्रसाद से पूछा, आपको क्या मालूम है ?

यमुनाप्रसाद ने कहा, हमारी सीढ़ी दूसरे के घर से काम के लिये आई हुई दीवार से लगी थी। रातको वह माघो मिश्र की दीवार से

लगी दिखी। माधो मिश्र उस रात बिना सेंध के अपने यहाँ से कुछ रुपये सामान और बरतन उठ जाने का बयान करते थे। आखीर चोरी या डाके के वक्त उनकी आँख खुल गई थी, मगर मारे डर के उन्होंने मुँह नहीं खोला और हिले भी नहीं; पड़े-पड़े देखते रहे। जो मूरत कम-वेश उनकी पहचान में आई उसका बयान यह है कि जवान खासा हट्टा-कट्टा था। H 83/T83 Ka.

रामराखन वाले ने पूछा, आपको इस मामले का क्या हाल मालूम है?

रामराखन ने कहा, मिश्र माधवप्रसादजी गाँव के भले मानुसों के अगुआ अपने ज़मींदार यमुनाप्रसाद के साथ हमारे यहाँ तड़के आये और हाल बयान किया, कि रात को ताला तोड़कर उनके घर चोरी हुई है। पिछली रात को पैर की आहट से या सामान की खनक से उनकी आँख खुल गई, वह मारे डर के चारपाई से उठे नहीं, पड़े-पड़े ताकते रहे। जो सूरत उन्होंने बयान की वह यह है कि एक गठा जवान अँधेरे में लगी सीढ़ी से चढ़ता नज़र आया। चढ़कर उसने सीढ़ी चढ़ा ली। सुनकर हमने थाने में रपोट कर आने के लिये कहा और शक में किसीका या किन्हींके नाम लेना चाहें तो लिखा दें, यह सलाह दी। अब सरकार की तहकीकात है। G H 950.

दोनों सिपाही अलग-अलग खड़े रहे। थानेदार ने दोनों से अलग अलग मिलकर बातें कीं और कारवाई समझाई। सिपाहियों ने फिर दोनों ज़मींदारों को बुलाया और रामराखन से उसी तरह यमुनाप्रसाद के पीछे लगकर जाने और क्या बातचीत होती है कहने के लिये कहा। यही आज्ञा यमुनाप्रसाद को हुई। दोनों ने पहलवान को बुलाया।

पहलवान रामसिंह ने काँपते गले से कहा, आये और मजबूरन काँपते हुए पैर रखते हुए एक बगल खड़े दोनों ज़मींदारों से मिलने गये।

यमुनाप्रसाद ने पहले की तरह पहलवान से कहा, हम कहते थे कि सर आयेगा। वही होकर रहा। इल्लत लग जाती है तो ऐसे नहीं

छूटती, कुछ खर्च दीजिये या अपनी जान पर खेलिये। अब सामने आया।

ज़मींदार रामराखन की ओर उँगली उठाकर पहलवान से उन्होंने कहा, यहाँ हमारी आपकी बातचीत के यह गवाह हैं। डकार जाइयेगा तो भुगतना होगा।

पहलवान के होश फ़ाख़ता हो गये। भूठी जूड़ी चौगुनी बढ़ी। थानेदार निर्विकार चित्त से देखते रहे। सिपाही अपनी-अपनी जगह खड़े तम्बाकू और पान धूकते रहे।

पहलवान ने कई दफ़े अपने निश्छल हृदय का परिचय देना चाहा मगर हुमस-हुमस कर रह गये। सरकारी मजबूरी छाती पर तिपाये की तरह बराबर ज़माँ पर जैसे जमकर बैठी थी, धार्मिक प्रतिक्रिया छाती के निचले हिस्से में। हाथ मला किये, काँपा किये हुमस-हुमस कर रहा किए, आँसू लाने की कोशिश करती आँखों देखा किए।

कुछ कहो नहीं तो जाते हैं, यमुनाप्रसाद ने आवाज़ ऊँची करके कहा।

पहलवान डगमगाकर रह गये।

रामराखन ने हिम्मत बँधाई। यमुनाप्रसाद से कहा, आओ, उधर लोगों से बातचीत कर लें।

अपने साथ रामराखन कई और मझोले नये आदमियों को ले आये। अपने दबाव से। थानेदार की तरफ़दारी के बिना उनसे रुपये वसूल न होंगे, इस ख्याल से उनके पास चले। साथ यमुनाप्रसाद गवाह की तरह गये। रामराखन की तरफ़ से यह सबूत है कि वह अपनी तरफ़ से मित्र ग्रामवासियों से रुपये नहीं वसूल कर रहे हैं, ग्रामवासियों की वचत के लिये ही ये रुपये लिये जा रहे हैं, नहीं तो थानेदार खुश नहीं होते, उनसे बैर होता है, जिसका भोँका पहले ज़मींदार के घर आता है। इनमें राममुख, शिवलाल, दो मुख्य हैं। अलग-

अलग हर एक से ज़मींदार ने यह कहा कि चोरी की शिनाख़्त में वे पुलिस की निगाह में आते हैं, उनका क्या कहना है। गिड़गिड़ा कर, समझाये जाने पर, हर एक ने अपनी इज्जत के बचाव के लिये दस-दस रुपये देना मंज़ूर किया। रामराखन के लिए यह तारीफ़ वाली बात हुई कि उनके आदमियों से थानेदार को बीस रुपये की आमदनी हुई जिसमें दो रुपये कम से कम उनके हैं।

दोनों ने चलकर अपनी-अपनी बातें कहीं। सिपाहियों से थानेदार ने सुना शिनाख़्त वाले असली आदमी के अलावा ग़ैर आदमियों से बीस रुपये रामराखन की मार्फ़त मिले।

यमुनाप्रसाद ढीले हुए भी, सरकार की फ़र्मावरदारी के बल से कड़े रहे।

मिश्र जी का अभी समय न आया था। थानेदार ने समझाने के लिए कहा, पहलवान की निगरानी खुलवाई जायगी इसलिए बदमाशी लगाई जाने वाली है; पुलिस मुद्दै होने पर मदद न पहुँचेगी, सज़ा हो जायगी।

यमुनाप्रसाद सिपाही से सुनकर पहलवान के पास फिर गये।

एक दफ़ा ठण्डे होने, सोचने समझने का मौक़ा पाकर पहलवान ने दूसरे दफ़े भी आवाज़ लगाई।

मिश्रजी से पूछने का हुक्म हुआ। मिश्रजी ने रपोट के रुपये दे दिए थे। दिल कड़ा था। बहुत नीचा न देखने की हिम्मत बाँधे हुए थे, व्यक्ति के विचार से मुन्शी के खिलाफ़ भी हो चुके थे। चौकीदार पर भरोसा था कि गाँव का विचार रखेगा। इज्जत के ख़याल से बयान बदल दिये। कहा, एक लम्बा-लम्बा दुबला-पतला आदमी था, भीतर सीढ़ी लगाकर उतरा मुडैरी पर एक आदमी खड़ा था उसको सामान उठाकर देता रहा होगा, जब हमारी आँख खुली और हम हिले, चढ़कर मुडैरी पर हो रहा और सीढ़ी चढ़ाकर बाहरी

तरफ लगा ला, फिर एक रहे, दो या और उतर गये। हम अलसाये हुये, कुछ न समझे हुये, आहट से उठे और दिया जलाने को हुये, तबतक यह सब हो गया। दिया जलाकर हमने देखा तो कीठरी का ताला टूटा था और चार पेठियाँ, और कुछ बासन गायब थे। दरवाजा खोलकर आवाज़ लगाई और बाहर देखा तो सीढ़ी लगी थी। रात साढ़े तीन का वक्त रहा होगा।

थानेदार ने उसी तरह सुना। निगरानी-शुदह पासी के साथ पहलवान के आने की गवाहियाँ उसी तरह ली गईं और पहलवान से फिर उसी तरह पूछने के लिये कहा गया।

यमुनाप्रसाद को इतना ही बल था कि गवाहियों की व्यवस्था कर रखी थी।

पहलवान के पास फिर गये और पूछा और खुलकर कहा भी कि अगर पुलिस को खुश नहीं करते तो बँधते हैं यानी बदमाशी लगाई जाती है, सज़ा की भी नौबत आ सकती है। कहीं माल बरामद हुआ, जब कि पुलिस जहाँ चाहेगी तलाशी लेगी, तो ईश्वर के बचाये भी नहीं बचते। पहलवान ने एक दफे मिश्र जी की तरफ देखा। मिश्र जी को भी मददगार चाहिये था, एक पानी दिखा चुके थे, यहाँ अपने बयान में पहलवान की पीठ भी बचाई थी, गर्दन कड़ी करके उनकी तरफ देखकर इशारा किया।

पहलवान ने जूड़ी में जैसे काँपकर कहा, भई, जब पीछे पड़ गये तब दस रुपये तक कहो तो बाज़ आये; नहीं तो सेंट-मेंत की बला है, आप गाँव के ज़मींदार हैं, जानते हैं कि बेकसूर की मदद होनी चाहिये, बिना कारण गला फंस रहा है।

यमुनाप्रसाद ने कहा, दस रुपये से काम न चलेगा। जय मामला लड़ गया है तब बचाव कठिन है। देर करना ठीक नहीं है। क्राफ़ी सोच विचार चुके। कबूली या अख़ीर है कह दें।

पहलवान ने कहा, दस और दे सकते हैं, बस ।

यमुनाप्रसाद का चार सौ का अन्दाज़ा बीस में आया । चढ़ो पैंग घट गई ।

सिपाही से चलकर कहा कि बीस रुपया देना चाहता है ।

सिपाही ने थानेदार से जाकर कहा ।

थानेदार ने कहा, बेलजत है ।

सिपाही ने कहा, माल बरामद नहीं, कुछ रोज़ तक तहक़ीक़ात कर लीजिये, फिर बाँधिये, फिर जैसी हुज़ूर की मर्ज़ी ।

थानेदार ने कहा, हाँ बदमाश की तरफ़ के भी गवाह होने चाहिये ।

नाशते का हिसाब था । उस रोज़ थानेदार चले गये ।



पंद्रहवीं नज़र

मनोहर बम्बई न जाकर काशी आया। गाड़ी से उतरकर स्टेशन पर एक पुस्तिका खरीदी जो काशी पर थी। टिकट देकर स्टेशन से बाहर निकला और पुल के नीचे राजघाट पर चलकर बैठा। गंगा और किनारे की उजड़ी हुई पुरानी बस्ती देखता रहा। इक्के दुक्के लोग आते जाते रहे। पूछने पर उसको मालूम हुआ, पुरानी काशी वरुणा की तरफ और थी। किसी किसीने कहा, वरुणा के किनारे तक थी और वरुणा के किनारे-किनारे इस तरफ़। बीच में गंगा के किनारे कुछ आगे क़िला पड़ता है। अस्सी की तरफ जहाँ आबादी है, वन था। मुग़ल-कालीन काशी अस्सी-नाले तक थी। तुलसीदास जी का स्थान उसी जगह है। राजघाट के नीचे का हिस्सा हिन्दू कालीन पुराना है। बहुत-सी चीज़ें खोदने पर, मिलती हैं। मनोहर डेढ़ घंटे तक बैठा रहा। काशी वाली किताब पढ़ डाली। लोगों से भी जानकारी प्राप्त की। सभी के पते लगाये। संस्कृत की पढ़ाई के बारे में भी पूछा कि क्या-क्या प्रबन्ध हैं। फिर स्नान करके धोती सुखाई। फिर जलपान किया और शहर की तरफ़ चला।

दो-तीन रोज तक घूमता-पूछता सुविधायें देखता रहा । धनिकजनों और राजों-महाराजों के दिये दान और विद्या के प्रबन्ध की जाँच करता रहा । स्वभाव में जो जलन थी उसकी लपटों में जलाने का अन्वेषण प्रबल था । संस्कृत वह इतनी जानता था कि काशी में सम्मान की सर्वत्र उसको सुविधा हो । मगर जिस परिस्थिति का वह मुकाबिला कर रहा था उसका मित्र उसको कहीं नहीं मिला । द्विजों के शूद्रत्व से उसका रोंयाँ-रोयाँ लपट की जीभ हो रहा था । उनको जलाने या जाति में नई जान फूँकने की सहूलियत उसको उन सभों और पाठशालाओं से नहीं हुई । इतर जनों में भी प्राचीन भावना थी । अगर कहीं अंग्रेजी राज के कारण हुमसते थे तो उनका हाथ पकड़कर रास्ते पर ले चलने वाला न था । जाति का कोई व्यक्ति संस्कृत करने वाला चाहिये वह समझा । स्कूली विद्या और सरकारी नौकरी से अपने पाये नहीं पुख्ता होते । वही रास्ता चालू रहता है जो गुलामी वाला है । उसने छिपकर काम करने की ठानी । उसको विश्वास था कि संस्कार के साथ शास्त्री तक वह बीस आदमियों को ले चल सकता है जो ब्राह्मणोतर कहे जाते हैं । अपनी जातीय मर्यादा शास्त्रानुकूल द्विजत्व वाली वे आप ले लेंगे, उसको विश्वास था । वहीं वह जम गया और भूमि की खोज करने लगा । उसके पास बम्बई तक के लिए जितना खर्च था, वह एक मास तक सादगी से काशी में रह सकता था । घर की चिन्ता अविवाहित युवक को न थी । घर का मुँह वह मर्यादित होकर ही देखेगा ।

उसने देखा काशी सभी प्रकार के मनुष्यों की आवादी है । मन्दिरों, मठों और राजभवनों के अलावा उसके चार पाँच मुख्य विभाग किये जा सकते हैं । उसी भू-भाग के रहने वाले लोग मुख्य हैं । इसाइयों के अलावा, मुसलमान, बंगाली, गुजराती, मराठे अपने-अपने निवास बनाये हुए हैं । काम स्थानीय जनों में ही सम्भव है ।

उसका विरोध द्विजों द्वारा अवश्य होगा। मगर स्थानीय जिन वैश्यों तक संस्कृत की प्रथा थी उनके दायरे से कुछ उतरकर उसने हिसाब बाँधा। जो जातियाँ प्रजा के रूप में शूद्र कही जाती थीं उनको उसने वैश्य के रूप में समझा, दिल से ब्राह्मण से भी ऊँच। जिस प्रचत्नन के घाव उसको लगे थे, उससे बचाव का यही रूप उसने निकाला। एक जगह जमकर घूम-घूमकर हाल मालूम करता रहा। धनिक शूद्र काशी में बहुत थे।

एक हफ्ते के अन्दर उसने उनमें नई जान डाल दी। संस्कृत की पढ़ाई से उनका सामाजिक क्रम ऊँचा उठेगा, उनकी समझ में आया। जो लड़के स्कूल नहीं जाते थे उनको उसने अपनी पाठशाला में लिया। जो स्कूल और कालेज में संस्कृत लिये हुए थे उनको वेतन लेकर पढ़ाने का प्रबन्ध किया। फायदा यह सुझाया कि एक पठित ब्राह्मण उनके सामाजिक क्रम को उठाने का सहायक है, उनके घर की पकी साग-पुड़ी खुल्लमखुल्ला खायेगा; इस सुविधा को वह गाँठ बाँधे रहेंगे और आवश्यकता पड़ने पर प्रमाण के रूप में पेश करेंगे; मगर जबतक खासी तैयारी न हो जाय तबतक यह भेद न खोलें, क्योंकि वह अकेला बहुसंख्य ब्राह्मणों से अकारण विरोध न करेगा। लोग उसकी बात से बहुत प्रसन्न हुए। वह तुल गया था, उनके इम्तहान में कटा नहीं। काम शुरू हो गया।



सोलहवीं नज़र

मनोहर उषाकाल उठकर निवृत्त होकर दशाश्वमेध में गंगा स्नान करके विश्वनाथ जी के दर्शन करता था, फिर लौटकर लड़कों को पढ़ाता था। दुपहर को भोजन-पान के पश्चात् दो घण्टे विश्राम करता था, फिर अश्वीर आचार्य-परीक्षा की पढ़ाई में लगता था। रात को स्कूल-कालेज के लड़कों को उनके घर चलकर पढ़ा आता था। दुपहर का बनाया भोजन रखा रहता था, दस ग्यारह बजे रात को फुरसत पाकर करता और सो जाता था। इस प्रकार कई महीने पार कर दिये। लोग उसकी तल्लीनता और परिश्रम से प्रसन्न थे। प्रायः उसकी पूड़ियों की दावतें करते थे। इस प्रकार जीवन का पौधा लहलहाने लगा। लोगों में काना-फूसी शुरू हो गई, मगर अभी तक चढ़ाई न हुई थी। ब्राह्मण सुनकर कसमसाकर रह जाते थे। उनके समर्थक क्षत्रिय और वैश्य सुन लेते थे, पराधीनता की दोहाई देकर रह जाते थे। इस प्रकार छः महीने और पूरे हुये। मनोहर आचार्य-परीक्षा के इम्तहान में बैठा और प्रथम होकर पास हुआ। इससे उसके सहकारियों में आनन्द का दूसरा तूफान उठा। वे उसके पीछे जानोमाल खपाने को तैयार हो गये। उसकी तारीफ़ अब

बनारस के इतर जनों के घर-घर थी। ब्राह्मण के नाम से वही माना जाने लगा। वहाँ के लोग, खासतौर से ब्राह्मण और जगे, परन्तु दान-दक्षिणा के खाते में उसका नाम न होने के कारण, उसकी तारीफ़ सुनकर अवज्ञता से मुँह फेर लेते थे, कहते भी थे, हमारे यहाँ उसकी कोई मान्यता नहीं, न उसकी पाठशाला कोई पाठशाला समझी जाती है।

बनारस में मनोहर इस प्रकार छिप गया कि घर वालों को डेढ़ साल हो जाने पर भी कोई पता न चला। उसने एक भी पत्र नहीं लिखा। जीकर भी जैसे मर गया हो। संस्कृत का आचार्य होकर वह दूसरे विषयों की तरफ मुड़ा। अँग्रेज़ी भी सीखने लगा। स्वस्थ था, परिश्रम सफल हो चला। उसके छात्र टूटी-फूटी संस्कृत में बातचीत करने लगे। घर वालों का कौतूहल बढ़ चला। इस समय काशी में ज़ोरो से लोग क्रिश्चन बन रहे थे। इसकी पाठशाला की इसी डाट के कारण ज्यादा मुस्त्रालिफ़त नहीं हुई। वह खुद अपना काट सोचे और लिए रहता था, लोगों को समझाया भी करता था। काशी के धनिक वैश्य जो ब्राह्मणत्व के हक़दार थे, भीतर से शूद्रों के संस्कृत-पठन के समर्थक थे। मनोहर अबतक इतनी तैयारी कर चुका था कि इन लोगों को शूद्रत्व के आवरण से पृथक कर देने में प्रमाण-प्रयोगों द्वारा समर्थ हो जाय। लोग उसकी इतनी इज्ज़त करने लगे कि उसको देखकर खड़े हो जाते थे और हाथ जोड़कर नमस्कार करते थे। कुछ प्रथायें भी उन लोगों ने अपने बीच में चला ली थीं। उनकी प्राचीन : या द्विजों से मिलते वक्त दूसरी थी। मनोहर को इन सबका ज्ञान हो गया।

काशी में बहुत तरह के लोग रहते हैं। सभीका उद्देश्य पुण्य-सञ्चय है। पुण्य के प्रकार बहुत से हैं। रानी विमला का उनमें एक वैसा ही है जैसा मनोहर का। रानी साहिबा अबतक भारत के

काफ़ी खाक़ छान चुकी है। अभी उम्र सिर्फ़ पच्चीस साल की है, मगर बिधवा हैं; पति शाराब-ख़ोरी से नष्ट-स्वास्थ्य होकर गुज़र चुके हैं। सरकारी बन्धुत्व का रानी साहिबा पर अत्याधिक आक्रमण हो चुका है। वैधव्य की बाधा स्वल्पकाल के लिये भी नहीं मानी गई। उन्होंने अपने कहार से सुना कि एक पण्डित इस प्रकार का काम कर रहे हैं। इससे उनका मन ऊँचा उठा। प्राचीन प्रथा से उनकी रत्ना नहीं हुई, इस नवीनता के जागरण में काम करने के लिये गुप्त रूप से उन्होंने हाथ बढ़ाया, अर्थात् एक दिन मनोहर से मिलने के लिये कहा। ख़बर पाकर मनोहर ने मिलने का अपना रस्ता निकाला; कहा, नहाते वक्त दशाश्वमेध घाट पर बात-चीत हो सकती है, अभी खुलकर मिलने में बहुत तैरह की आपत्तियाँ हो सकती हैं, जिनका प्रतिरोध किसी पक्ष के द्वारा नहीं हो सकता। सम्वाद सुनकर रानी साहिबा सहमत हुईं और रात चार बजे जब इक्के-दुक्के आदमी ही नहाने के लिये जाते हैं, साधारण वेश से स्नानार्थिनी की तरह उससे मिलने के लिये कहा। दिन निश्चित हो गया। कहार रानी साहिबा को लेकर आया। मनोहर रास्ते पर मिला।

रानी साहिबा ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया। मनोहर ने भी किया। बत्ती के प्रकाश में रानी साहिबा ने देखा, दिव्य युवक है। कहा, हम आपकी तारीफ़ सुन चुके हैं। यह लीजिये, कहकर रुमाल में बँधी हुई एक रक़म मनोहर को दी। हाथ बढ़ाकर मनोहर ने ले लिया। रानी साहिबा ने कहा, अपने काम के प्रसार के लिये, अपनी सहायता के लिए खर्च कीजियेगा। हमारा पता आपको मालूम है। इसी माध्यम से सहायता के लिये कहियेगा। हम अपने हाथ आपको अर्थ देते रहेंगे। देश के युवक, अब हम वह नहीं हैं, मगर देश की भलाई के लिए तुम्हारे साथ हैं। हमारी जो तौहीन

होती है, उसके निराकरण के लिये कम से कम हजार युवक तैयार
कर दो।

मनोहर को जैसे साक्षात् अन्नपूर्णा मिलीं। उसने हाथ जांड़कर
नमस्कार किया। कहा, मुझको आज तक ऐसा दान नहीं मिला, ऐसी
दात्री मैंने आज तक नहीं देखी।

हंसी

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

हं निरु

सत्रहवीं नज़र

मिश्र जी, मुन्शी के खिलाफ दरखवास्त दे चुके थे। गाँव में दल बाँधना शुरू किया। पटलवान के खिलाफ उनकी गवाही नहीं थी। यह ज़मींदारों को बुरा लगा। रिश्तेदारी और मान्यता के कारण सर उठाकर वे उनके खिलाफ कुछ कह नहीं सकते थे, लिहाज़ा आमदनी में जो रिश्तों से होने वाली था फ़र्क आया। चौकादार भी मिश्र जी के साथ था। कुछ लोग और बंधे। रामसिंह ने अपने लोगों में पैरवा करने की दौड़ लगाई। मनोहर के गाँव भी गये। थाने में चारों तरफ से सिफारिशें सच हालात के साथ पहुँचने लगीं। थानेदार सुनते और खिलते गये। बिना सैंध की चोरी थी, इसलिये बड़ा महत्व उसको नहीं दिया; उलटे मिश्र जी पर निगाह डटाई। अबतक मुन्शी के खिलाफ कप्तान के यहाँ से तहर्काकात हो गई। मामले को सच समझा हो या झूठ, मुन्शी का बहरहाल तबादला हो गया। बरखास्त होते होते बचे, यह उन्होंने अपना सांभाग्य समझा। बड़ा बदमाश हलका है कहकर बोरिया-बधना सपेटकर बिदा हुए। मिश्र जी को खबर हुई कि मुन्शी बदल गये। थाने का हाल अदालत वाले लोग बाज़ार आते-जाते लेते रहते हैं। मिश्र जी ने निश्चय किया कि अब

फंदा मज़बूत डाला जायगा, बचाव किये रहना चाहिये। ज़िले में उन्होंने वकील की डायरी लिखा दी कि यह यह हुआ। गाँव में बात-चीत बढ़ी कि अब मिश्र जी के हाथ गाँव के लोगों की बागडोर है। सामाजिक फ़ैसले आदि के वह मुखिया माने जाने लगे। आमदनी भी बढ़ी। ज़मींदारों से कम लगान पर चार बीघे खेत और मिले। वह समझते थे, दिन-दूने रात-चौगुने बढ़ते पाप का परदा या फाश करेगा तो बाप-दादों की ज़ांड़ी माया महीने भर में वह जायगी। इन खेतों से भी अगर ज़मींदार वाली इज्जत बरकरार रहे। थानेदार तबतक माल की जाँच करते रहे। गये हुये समान की फिहरिस्त उनके पास थी। उन्होंने चौकीदार से ले ली थी।

जिस तरह चोरी का न होना एक सरकार का धर्म है, उसी तरह चोरी का होना भी उसका धर्म कहा जा सकता है, जब कि लोगों की माली हालत के सुधार का तरीका ही उलटा है, ज़मींदारों के बड़प्पन की साख चलती है, विलायत की नोबीलिटी का देश पर सिका है। इस तरह, एक थाने में हर रात चोरियाँ होती रहती हैं, कुछ लिखी जाती हैं, कुछ नहीं। इस चोरी के बारे में जो पहलवान से तअल्लुक रखती है, थानेदार को बहुत विश्वास न था, मगर मिश्र जी की पार्टी को वह फसाना चाहते थे। उन्होंने शिकायत के जवाब में जो रपोट दी थी वह मुन्शी के माफिक थी और मिश्र जी के खिलाफ। गाँव के ज़मींदारों को भी उन्होंने समझाया कि मुन्शी का तबादला हुआ, इसके माने यह नहीं कि वह बरखास्त हो गये या सरकार की नज़र में गिर गये। अगर रैयत में इतनी गरमी होगी तो सरकार के मुलाज़िम में कितनी हो सकती है। इसका उल्टा सबने समझा कि मिश्र जी एक दिन बधि जाते हैं। ज़मींदारों को भीतर एक खुशी हुई, मगर दाव पर चर्चा नहीं पाते थे। ज़मीन देने का कारण भलमनसी का नाता था

बचाव भी रखा था कि उनको अपना तरफदार बनाये रहें कि कलई न खोल दें ।

इस प्रकार एक अरसा गुज़र गया । पहलवान पहले की तरह बाज़ार आते-जाते रहे, आमदनी बढ़ती रही । उठक-बैठक मिश्र जी के यहाँ बढ़ी और मान्यता भी गाँव में उन्हीं की रही । चौकीदार भी आता-जाता रहा । और लोग भी आने-जाने लगे । जिनके दरवाजे बैठने-बिठाने के लिये चारपाई न पड़ती थी, उनके वहाँ पड़ने लगी । यदा-कदा ज़मींदारों का भी शुभागमन होने लगा । किसीको पता नहीं चला कि मिश्र जी ने क्या किया कि मुन्शी यहाँ से वहाँ हो गये । एक ही हाथ से मिश्र जी ने अपना मैदान साफ कर लिया । लोगों के यहाँ से दूध, घी, सब्ज़ी आदि गाँव की चीज़ें मिश्र जी के यहाँ व्यवहार में अधिक आने लगीं । ज़मींदारों से इस तरह की शिकायतें थानेदार सुनते रहे, मगर अबतक काँपा न लगा था । चोरियों के सामान में जो चीज़ें बरामद हुईं उनको अभीतक निश्चय पूर्वक थानेदार मिश्र जी की चीज़ें नहीं कह सके थे । इस ताक में थे कि एक अरसे के बाद उनको पहचनवायेंगे ।



अठारवों नज़र

इस प्रकार एक माज में आधिक बीत गया। मिश्र जी तथा लोगों ने निश्चय किया कि शिकायत रफ़ा हो गई। थाने का हिसाब मिश्र जी को मालूम था। वह जानते थे, दूब की जड़ बारह साल तक सूख कर मिट्टी और पानी के लगते जिस तरह हरी होती है उसी तरह सरकार की निगाह पर चढ़ा आदमी ज़िन्दगी के आख़ीर दम तक याद किया जाता है। सरकार और ज़मींदार का जो साथ है उसके बीच में आ गये हैं। इसका कारण ब्राह्मणत्व का एक दूसरा वङ्गपन है। इसको छोड़कर भी वह साँस नहीं ले सकते। इतनी मान्यताओं के बाद आदमी का जीना मोहाल हो जाता है। तैयारी किये रहना चाहिये, जो कुछ होगा भोग लिया जायगा। इस बल पर मिश्र जी बढ़ते गये।

हलके में थानेदार की निगाह गवर्नर की निगाह से बड़ी मान्यता रखती है। थानेदार बदले मगर इस मामले की याद दिला गये। दूसरे थानेदार हसन खाँ ने मामले को समझ लिया, सरकारी लोगों की गवाहियाँ ले लीं, चार्ज लगाने की पेशबन्दी की। ज़मींदारों से इच्छानुसार रपोटें लेते रहे। चार्जशीट तैयार करते रहे। एक रोज़ चौकीदार ने मिश्र जी से कहा, माल की पहचान करनी है। जो माल

बरामद हुआ है उसमें आपकी लिखाई चीजे भी हैं। चलिये थाने में पहचान कर बताइये। मिश्र जी ने कहा, हाँ, चलेंगे। स्नान-भोजन करके दो-तीन मित्रों को लेकर देवी जी की जय करते हुये चले। जानते थे, जाल है। अपना सामान गया ही नहीं, पहचान किसकी। धवराये कि अब फँसाये जायेंगे। गवर्नमेंट को मानते ही थे, व्यक्ति-गत रागद्वेष था। थाने चलकर कमरतक झुककर थानेदार को सलाम किया। थानेदार से चौकीदार ने परिचय दिया। थानेदार कुछ न बोले। मिश्र जी आँखें और मनोभाव पढ़ते रहे। बहुत माफिक नहीं देखा। बरामद शुदा चीजें न थीं, दूसरी जगह से लाई गईं थीं। सामने लाकर रखी गईं। तीन का समय था। मिश्र जी एक-एक देखते रहे। चीजें न थीं जो शिनाख्त में न आयें जैसे रुपये-पैसे, सोने चांदी की ईंटें या कच्चा चांदी। जेवर और कपड़े वह देखते फिरे। दिल में सोचा अगर नहीं कहते हैं तो बात नहीं बनती। गोल-गोल कहते हैं तो बचाव की जगह रहती है, मगर दूसरे गाहक आ सकते हैं या तैयार किये जा सकते हैं। अगर कहते हैं कि चीजें वही हैं तो मामला लड़ जायगा। खुद-ब-खुद थानेदार को जिनसे ज़िले की अदालत में भेजना पड़ेगा। अभी अगर कोई भोल या कोई पोल है तो वहाँ खुलेगी, थानेदार के हाथ से यह मामला निकल जायगा। अदालत में हाकिम के यहाँ होगा। यह भी सोचा कि जो सरकार यहाँ है वह वहाँ भी है; हमको थोड़ी-सी जगह वहींसे मिल सकती है।

मिश्र जी ने कहा, जेवर वगैरह वैसे ही जान पड़ते हैं। इनकी पहचानने वालीयाँ भी हैं। पहचान उन्हींकी पक्की होगी, इसलिये मामला ज़िले में ही फ़ैसला पा सकता है। वहाँ उन लोगों को हम पहचानने के लिये ले जा सकते हैं।

थानेदार ने कहा, मगर कोई चीज़ आपकी है, यह कहने ही से आपकी नहीं हां जायगी। इसकी भी जाँच-पड़ताल है। सरकार दूध का दूध और पानी का पानी निकालकर छोड़ेगी।

मिश्र जी ने कहा, क्या यह देख नहीं रहे, सरकार बाघ और बकरी को एक ही घाट पानी पिलाती है।

थानेदार ने कहा, इनमें जो जो चीज़ें आपकी हों, उठाकर लिखा दीजिये।

मिश्र जी ने जेब में फिहरिस्त की नक़ल निकाली और देखते हुये पाँच अदरें थानेदार के पास ले गये, कहा, यह अदरें हमारी फिहरिस्त में दर्ज हैं।



उन्नीसवीं नज़र

थानेदार को फँसाना था, इसलिए ज़मींदार से लिया माल ज़िले चालान कर दिया। हाकिम से मिलकर कुल बातें समझा दीं कि जिस तरह की कार्रवाई हो रही है इससे गाँव बिगड़ रहा है; सरकार का पाया उखड़ जाता है; लोग ज़मींदार और सरकार के मातहत नहीं रह जाते; वे मामले को व्यक्तिवादी बना देते हैं। चोरी से लेकर अब तक की तहकीकात का हाल थानेदार ने समझाया। शहादत के लिये कहा। प्रार्थना की कि मिश्र बदमाश आदमी है; इसने सरकार के मुलाज़िम के खिलाफ दरखास्तें दी हैं और लोगों को फँसाये रहता है जिससे पुलिस को कार्रवाई में अड़चन पड़ती है। माल असली चोरी का नहीं, ज़मींदार से लिया गया है। कुछ चीज़ों को यह अपनी बताता है। यहाँ मकुनी अदालत में हाकिम को इसके खड़े का अन्दाज़ा हो जायगा; फिर हुक्म के मुताबिक़ कार्रवाई की जायगी। शहादत की तारीख़ लेकर थानेदार चले गये। माल थाने में जमा रहा।

तारीख़ के रोज़ मामला समझाने के लिये गाँव के ज़मींदारों और गवाहों को लेकर गये। मनोहर के गाँव के भी ज़मींदार और पासी ये। पड़ोस के प्रतिष्ठित कहे जाने वाले प्रायः सभी लोग। इस तरह

फाँसा कि थाने के हलके में कहीं भी मदद न मिले। बाहिरी लोगों को समझा दिया, सरकार के बागी लोगों की किसी तरह की मदद न की जाय। पहले मामला शुरू हुआ, फिर गवाहियाँ गुज़रीं। हाकिम ने सुन लिया, फिर असामियों की तारीख़ ली।

अपने लोगों को समझा दिया कि किसीके कान यह बात न पड़े। सब लोग सरकार के दुश्मन को समझे रहें।

थाने से मिश्र जी को उनके परिवार के साथ शिनाख़्त के लिये तारीख़ बता दी। पहलवानको भी बुलाया।

मिश्र जी को बुलाने वाला एक सिपाही था। चौकीदार का नाम न था। मिश्र जी को इतना ही खटका। उन्होंने चौकीदार से आरजू-मिन्नत की। वह चलने के लिये तैयार हो गया। ऊँचे ब्राह्मण से वह विनम्रता ही चाहता था।

ज़िले में वकील की मार्फ़त मिश्र जी मिले। पहले से रिपोर्ट लिखाये हुये थे दरखास्तों का ज़िक्र वकील के यहाँ था। चौकीदार की व्यक्तिगत गवाही वकील ने ले ली। और और लोगों से भी पूछ-ताछ की। मामला ज़ोरदार था, वकील को हिम्मत हुई। माल की पहचान के लिये मिश्र जी की औरतें सिखाई-पढ़ाई थीं। उन्होंने उन्हीं जेवरों को उठाया और कहा हमारी-जैसी हैं।

हाकिम ने अलग वकील को समझा दिया कि यह आदमी सरकार के खिलाफ़ चलता है और लोगों को उभाड़ता है। जो सरकारी तरीक़ा है उसको बदल रहा है। चालाक है इसमें शक़ नहीं। इसके घर की औरतें भी चालाक हैं। मगर सरकार का काम अपने ही रास्ते पर होगा। आप अदालत के सर न हों, नहीं तो बकालत-नामा ज़ब्त किया जायगा। इतनी आज्ञादी एक मामूली रियाया को नहीं दी जा सकती। आप अपने तौर से समझा दीजिये बाजू बचाकर।

वकील ने वैसा ही किया । कहा, हम अपनी ताकत भर लड़े, लेकिन हाकिम थानेदार का तरफदार है । अगर यह चीजें आपही की हैं तो आप ज़ोर देकर कहिये । दुफसली बातें न कीजिये । अदालत को शक होता है । वकील भी कमज़ोर पड़ता है ।

मिश्र जी ने कहा कि हम ज़ोर देकर नहीं कह सकते । थानेदार की जो मज़ीं हो करें । सरकार को मानते हैं, मगर सरकार के मुलाज़िम की गैरकानूनी कार्रवाइयों को भी मानना पड़ेगा यह हमसे न होगा ।



बीसवीं नज़र

कई रोज़ बीत गये। गाँव में तहलका मचा हुआ था। लोग कानों में बतला रहे थे। मिश्र जी के यहाँ आने-जाने वाले लोगों की हिम्मत पस्त थी। सारा वायुमंडल दहशत खाया हुआ था। किसीको कुछ मालूम न था क्या होने वाला है। सब अपना-अपना अन्दाज़ा लड़ा रहे थे। कोई कह रहा था, बगावत की वजह, ज़मींदार और थानेदार से कुछ का कुछ कह देने के सबब, मिश्र जी को सज़ा होने वाली है। उनके दरवाजे, कहा जाता है, बदमाशों की बैठक लगती है, जो रैयत को ज़मींदार के खिलाफ़ भड़काते हैं। बाग़, पनघट, घर, गली, कूचा, खेत, खलिहान सब जगह ऐसी ही बातों का तूमार बँध रहा था।

रात पार हो चुकी थी। सूरज की किरण नहीं फूटी थी। चिड़ियाँ डालों पर प्रभाती जा रही थीं। इक्की-दुक्की औरतें बाहर निकलने लगी थीं। तीन सिपाहियों के साथ थानेदार आये और पहलवान के दरवाजे आवाज़ लगवाई। पहलवान निकले। सिपाहियों ने बाँध लिया और उनका चालान कर लिया। गाँव भर में सनसनी फैल गई। घर में रोना-पीटना पड़ गया। सिपाही पहलवान को लेकर चल दिये। कुछ दूर

तक ज़मींदार साथ गये । फिर लौट आये । बड़ी हमदर्दों से पहलवान से कहा, हम कहते थे, पहलवान, सरकार की आँख गड़ी है, अभी दो का स्वर्च है, फिर चार का होगा, इसपर भी बचाव न होगा । घूम-फिरकर ज़मींदार की ही शरण लेनी पड़ेगी ।

पहलवान ने कहा, जबतक रोग गले नहीं लगता तबतक वैद्य की बात याद नहीं आती । हम दो-सौ रुपये देने को तैयार हैं ।

ज़मींदार ने कहा, चलिये थाने में देखें अगर थानेदार मान जाय ।

पहलवान को ढाढ़स हुआ ।

ज़मींदार ने थानेदार से कहा, अगर बन्द कर दीजियेगा तो रुपये से हाथ धोना होगा, नहीं तो दो सौ रुपये देने को कहता है । खोल दीजिये, घर से ले आकर दे जाय ।

पहलवान को सिपाही ने खोल दिया, कहा, इन्हींके रहना ।

पहलवान सर लटकाये हुए घर गये, दो सौ रुपये ले आये और ज़मींदार के हाथ में रख दिये ।

हिसाब से बटवारा हो गया । पहलवान अपनी चौपाल में आकर बैठे ।



इक्कीसवीं नज़र

मनोहर के घर के लोग हताश हो गये थे। पहले दो एक दिन घर न जाने पर घर वालों ने रिश्तेदार ज़मींदार के यहाँ पूछ-ताछ की। ज़मींदार ने ढाढ़स बँधाया, चुपचाप बैठे रहो, कहीं काम से गये होंगे, अपने-आप ख़बर मिल जायगी कि ख़ैरियत है। इतने से घर वालों को प्रबोध हो गया। महीने भर इसी भरोसे पर बीता। मनोहर न आया। बम्बई की चिट्ठी आई, उसमें मनोहर का ज़िक्र न था। चिट्ठी के जवाब में घर वालों ने लिखा कि मनोहर एक महीने से लापता है। ज़मींदारों के यहाँ गया था, वे लोग कहते हैं, किसी काम से होगा, अभी तक कोई चिट्ठी नहीं आई। मनोहर के पिता को चिट्ठी मिली। पता लगाने के लिये दस रोज़ के अन्दर वह भी गाँव दाख़िल हुए। घर में रोना-पीटना पड़ा। मगर जब पूरी ख़बर नहीं मिली कि मनोहर इस संसार से बिदा हो गया है तब मिलने की आशा फिर बँधी। दूसरे रोज़ मनोहर के पिता अपनी बहन के यहाँ गये। वहाँ पूछने पर मालूम हुआ कि मनोहर उन्हींके पास गया है और पचीस रुपये क़र्ज़ लेकर। दो महीने के व्याज के साथ वह रुपया अदा कर देना चाहिये। मनोहर के बापने स्वीकार कर लिया, मगर पेट ऐंठने लगा

कि लड़के-का-लड़का गायब हुआ और ऊपर से रुपये देने पड़े, साथ व्याज के। ज़मींदारों ने समझाया, जवान आदमी है, कहीं नौकरी तजबीज़ करता होगा, गया होगा, धीरज रखिये। अपने आप संभलकर आ जायगा। यहाँ ज़ोर करने के लिये आया था, मगर दुनियाँ का रवैया कुछ और है, उसके आने के बाद से पुलिस के कई मामले लड़ गये, इसीलिये भाग गया, नहीं तो बँध गया होता। आप खामोशी से घर बैठिये या अपने काम पर जाइये। मनोहर के पिता घर चले गये। घर में जैसा सुना, कहा। गाँव के ज़मींदार से मिले, आरजू-मिन्नत की। ज़मींदारों ने भी शिकायत की कि मनोहर का मिजाज कुछ चढ़ा-चढ़ा रहता था, दो-एक जगह गये वहाँ बिगाड़ हो गई।

सारे गाँव में काना-फूसी होने लगी कि मनोहर चला गया लेकिन किसानों में किसीने उसकी निन्दा न की। मनोहर के पिता जिधर से निकलते थे उधर ही वाहवाही होती थी, तुम्हारी मूर्छें रख लीं, तुम्हारा सर ऊँचा किया, वह हमारा अपना भैया है, उसको कोई डर नहीं, हम जानते हैं कि लोगों ने उसको रहने न दिया, लेकिन वह वज्र है जो सर फोड़कर टूटे, वह हमारी पुकार है, हमारे आँसू से टपककर भाप बनकर उड़ गया है कभी खुशी की बारिश लायेगा।

तालाब में सिंघाड़े भरे हुए थे। कहार तक रहे थे। किनारे एक जगह कुटिया डालकर रहते थे। एक दीवार हाथ भर की उठाकर चूल्हा बना रखा था, वहाँ रोटी पकाते थे। मनोहर के पिता को देखकर बचू कहार बहुत खुश हुआ, सेर भर के करीब कच्चे सिंघाड़े ले आया और देकर कहा, आपके बेटे की तारीफ़ में है जो हम लोगों को ऊँचा उठाता है, ब्राह्मणों की तरह हमारा सर नहीं फोड़ता।

हरे-भरे बागों की कतार के किनारे से रास्ता था। रन फूली नहीं समा रही थी। इतनी ख़शबू किसी इत्र की दूकान में भी नहीं मिलती

और ऐसी अच्छी । उसके नीचे से एक चौगड़ा कूदता हुआ दूसरा
भाड़ी की तरफ चला गया । चिड़ियाँ बसेरे को लौट रहीं थीं । डालों
पर चहक रहीं थीं । सूरज सामने अस्त होने को था । मनोहर के पिता
घर लौटे ।



